श्रीक्षेत्र परिचय

चतुर्थ संस्करण

श्री जगन्नाथ मन्दिर परिचालना कमिटिकी ओरसे
टेम्पल आड्मिनिस्ट्रटरके द्वारा प्रकाशित
१९८४

मूल्य : दो रुपया पचास पइसा

श्रीक्षेत्र परिचय

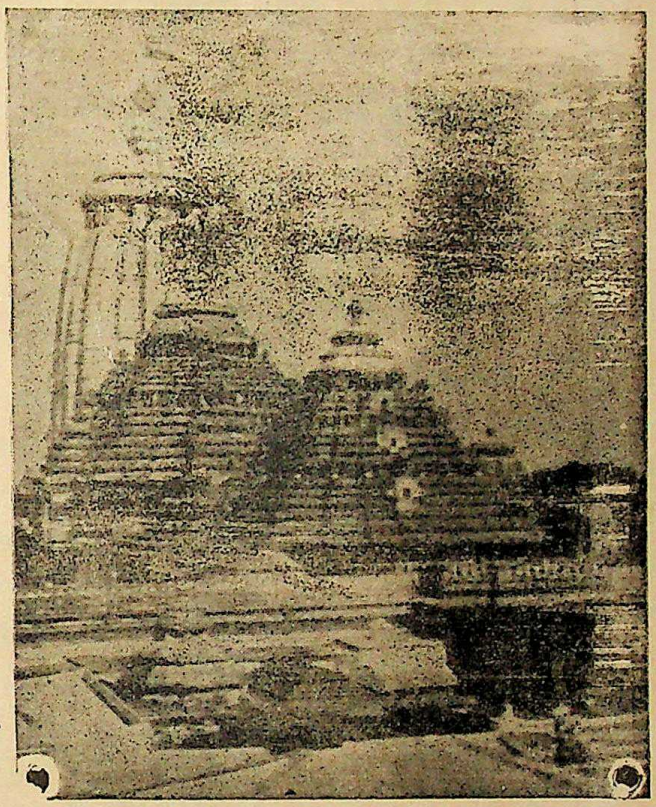

श्री जगन्नाथ मन्दिर परिचालना कमिटिको औरस
टेम्पल आड्मिनिष्ट्रेटर
४र्थ संस्करण, १९८४

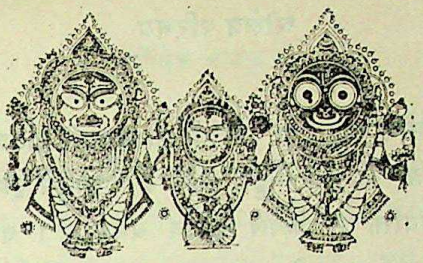

श्रीक्षेत्र परिचय

नीलाचल निवासाय नित्याय परमात्मने
बलभद्र सुभद्राभ्यां जगन्नाथायते नमः ।

श्री जगन्नाथ मन्दिर भारतको प्राचीन संस्कृति, धर्म, दर्शन, आध्यात्मबाद और प्रज्ञाका एक पुराना स्मृति स्तम्भ है। पुराणोंमें प्रसिद्ध पुरानी संस्कृतियोंकी जो कुछ स्मृतियाँ अबतक बाकी हैं, उनमेंसे पुरी एक महत्वपूर्ण धाम है यह क्षेत्र युगोंसे अतुलनीय गौरब तथा प्रभाबका अधिकारी रहा है। यह धाम भिन्न भिन्न नामसे नामित हुआ है। इसका प्रत्येक नाम दार्शनिक और आध्यात्मिक बिशेषताओंमें अनुपम है।

पुरी धामके नाम ये हैं —

(१) उचिष्टक्षेत्र, (२) उड्डियान पीठ, (३) पुरुषोत्तम क्षेत्र, (४) जमनिक तीर्थ, (५) कुशस्थलि, (६) शङ्ख क्षेत्र, (७) नीलाद्रि, (८) श्रीक्षेत्र, (९) मर्त्यबैकुण्ठ, (१०) पुरी, (११) जगन्नाथ धाम।

इन नामोंके उच्चारण मात्रसे ही आदमी पबित्र बनजाता है। इस पबित्र स्थानकी मिट्टी, पानी और बायुसे इस धामपर आयाहुआ व्यक्ति न केवल पबित्र बनता है। बाल्कि हर प्रकारसे गौरवान्यित हो जाता है। इस महान देबमन्दिरके भितरी भागके चारोंओर कइ पबित्र पुण्यक्षेत्र हैं। इनके दर्शनसे हो अमङ्गलके सारे प्रभाब दूर हटजाते हैं और पबित्र गरूड़-स्तम्भके पीछेसे चतुर्द्धा मूर्त्तिओंके दर्शनके द्वारा हर व्यक्तिकी आत्मा अमरत्वका लाभ करती है।

यह महान तथा पुण्यमय श्री जगन्नाथ मन्दिर बंगालकी खाड़ीके पूर्व-पश्चिम तटपर, कटकसे लगभग ६० मील भूबनेश्वरसे ४० मील दूर दक्षिणपूर्व रेलपथके कलकता-पुरी नामक रेलपथकी आखिर सीमापर है। इसके रेलवे स्टेसनका नाम है 'पुरी'।

पण्डुबंशके राजा उदयनके पुत्र बे इन्द्रबल। बे इन्द्रद्युम्नके नामसे अधिक परिचित थे। राजा इन्द्रद्युम्न इस स्थानके मूल निबासी (आदीबासी)योंको साथ लेकर पहले श्री जगन्नाथजी की पूजा-अर्चना करते थे। उन दिनों श्री जगन्नाथजीका नाम नील माधबके रूपमें परिचित था। इसके कई बर्षोंके बाद मगधके नन्दबंशीय नरपति महापद्मनन्द इस देबताके प्रति इतने आकृष्ट हुए कि उन्हें सबकी आँखोसे बचाकर मगध ले गये थे। इसके १०० बर्ष पूर्बे कलिङ्गके तत्कालिन महापराक्रम-शाली सम्राट खारबेलने मगधपर चढाई की थी और

श्री जगन्नाथजीको वहाँसे लाकर इस क्षेत्रमें फिरसे प्रतिष्ठित किया। ई० ८२४में उत्कलके केशरी वंशीय पुण्यश्लेक नरपति ययातिकेशरीने इस महान देवताकेलिए एक भव्य मन्दिरका निर्माण करवाया था। परन्तु समुद्र तटवर्त्ति स्थान होने के कारण नमकीन हवासे यह मन्दिर थोडेही वर्षोंमें नष्ट हो गया। इसके बाद ई० १०३८में उत्कलके गङ्गवंश संभूत चिरस्मरणीय नरपति महामना चोड़गंगदेव या चुड़ंगदेवके द्वारा आजके इस जगद्विख्यात मन्दिरका पुनः निर्माण हुआ।

इसके प्रमाणमें मंगराज राघवदेवके ताम्र शासनपर लिखा नीचेका श्लोक दिया जा रहा है —

"पादौ यस्य धरान्तरीक्षमखिल नाभिश्च मुर्वादिशः
श्रोत्रे नेत्रयगं स्वीन्दु युगलं मूर्द्धापिच द्यौ रसौ
प्रासादं पुरुषोत्तमस्य नृपतिः कोनाम कर्त्तुक्षमः
तस्येत्यादि नृपै रूपक्षितमयं चक्रेऽथ गंगेश्वरः।"

११०० ई० के लगभग उत्कलके तत्कालिन नृपति अनन्त बमनने, अब हम जिस जगन्नाथ मन्दिरको देख रहे हैं, उसका निर्माणकार्य प्रारम्भ करवाया था। उनकी एक पीढाके बाद उनके नाति (पौत्र) उत्कलके प्रसिद्ध गंगवंश नृपति राजा अनंगभीम देवके द्वारा इस बिश्वप्रसिद्ध भव्य मन्दिरका निर्माण कार्य समाप्त हुआ। इस मन्दिरके निर्माणमें प्राचिन उत्कलक औगंगा गोदाबरीतकके एक बिशाल साम्राज्यके १२

सालोंका राजस्व खर्च हो गया था। इनने वर्षोंके बाद भी वही मन्दिर बिना किसी परिवर्त्तनके आज हमारे सामने ज्योंका त्यों खडा है।

भुबनेश्वरके लिङ्गराज मन्दिर और कोणार्कके सूर्य्यमन्दिर की भांति पुरीके जगन्नाथ मन्दिरका स्थापत्य तथा शिल्पकला बिशेष रूपसे उल्लेखयोग्य नहीं। फिर भी इसमें जितनी शिल्प कलाऐ हैं ये सब हैं और पुरीकी नमकीन जलबायुसे नष्ट हो जानेकी आशंकासे उनपर चूनेका पलस्तर लगाकर ढंक दिया गया है। श्री मन्दिरके पश्चिम हिस्सेपर जो अंश बिना पलस्तरका रह गया है वहाँ हम इस मन्दिरकी शिल्पकलाओंके कुछ नमुने देख सकते हैं। अन्ततः यह निश्चित है की शिल्पशास्त्रके आदि प्रबर्त्तक ब्रह्माके पुत्र बिश्वकर्माजीके प्रति सम्पूर्ण अनुरक्त रहते हुए तत्कालीन उत्कलीय कारिगरोंने इन अनुपम बिशाल मन्दिरको बनाया था। स्थापत्य कलाके शास्त्रानुसार तथा देबमन्दिर निर्माण बिधिके मुताबिक इस मन्दिरको चार भागोमें बांटा गया है। जेसे —

(१) बिमान अथबा श्रीबत्स-खण्डाशाल मन्दिर।

(२) मुखशाला या नृत्य (नाट) मन्दिर।

(३) जगमोहन।

(४) भोग मण्डप।

प्रधान मन्दिरके चारोंओर एक बहुत बडा आँगन है। इसे मन्दिरकी भीतरी परिक्रमा (वेढा) या घेरा कहते हैं। इस भितरी घेरके भीतर श्रीमन्दिरके सिबाय और बहुतसे देब-देबीयोंके सुन्दर सुन्दर मन्दिर रहते हैं। इस भीतरी घेरा (परिक्रमा) की सीमा एक चहारदीबारकि द्वारा निर्दिष्ट रहती है। उसके बाहारकी तरफ मन्दिरकी बाहरी परिक्रमा (बेढा) या घेरा है। बाहरी घे के भीतर श्रीमन्दिर अन्तर्गत आनन्द बाजार, फुलका बगीचा रसोडा (श्रीमन्दिर पाकशाला) आदि हैं। बाहरी घेरकी आखिर सीमापर भी एक बहुत बडि चहार दीबार प्राचीर मन्दिरके चारोंओर घिरी है। इस प्राचीरके ऊँचाइ २२फूट और मुटाइ ६ फूट ५ ईच है। इसे मेघनाद प्राचीर कहाजाता है। इस बिशाल मन्दिरके चार मुख्य दरबाजे हैं। पूर्बो दरबाजेको सिंहद्वार कहाजाता है। दक्षिण तरफका द्वार अश्वद्वारके नामसे परिचित है। पश्चिम और उत्तर तरफके द्वार क्रकशः बाघद्वार और हाथीद्वारके नामसे प्रसिद्ध है। भिन्न मतबादके दर्शना-भिलाषी यात्री अपने-अपने धर्मबिश्वासके अनुसार भिन्न-भिन्न द्वारोंसे होकर जगन्नाथ मन्दिरमें प्रवेश करते हैं। श्री मन्दिरसे जनकपुर तक जो मुख्य रास्ता घया है। इसे बडदाण्ड कहाजाता है। इस मुख्य रास्तेके तलसे श्री जगन्नाथ मन्दिरकी ऊँचाई २१४ फूट है। इसकी चूड़ापर नीलचक्र बिराजित रहता है। सभी पाप-ताप और अधर्मोको बिनाशके लिए इस चक्रकी स्थापना श्री मन्दिरकी चूडापर की गई है।

हिन्दुधर्मके शास्त्रों और पुराणोंके अनुसार सारे भारतमें चार धामोंकी वर्णना मिलती है और हिन्दु तीर्थयात्री इन पवित्र धामोंके दर्शनसे अपनी आत्माको पवित्र बनाते हैं। इन चार धामोंमें पुरी श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण धामके रूपसे सर्वत्र परिचित है। हिन्दुओंके धर्मानुसार बद्रिनारायण, द्वारका और रामेश्वरम् के दर्शनके बाद ही पुरुषोत्तमक्षेत्र (पुरी) धामके दर्शन करनेका बिधान है। कहा गया है, भगवान श्री जगन्नाथजी बद्रीनारायणमें स्नान करते हैं, द्वारकामें सिंगार करते हैं, पुरीमें अन्नका भोग ग्रहण करते हैं और रामेश्वरधाम भगवान-जीका शयनस्थल है। श्री जगन्नाथजीको हर रोज लगनेवाला भोग अति उत्तम और सात्विक गुण बाले पदार्थोंसे बनाया जाता है। हर रोज दिनको तिनबार और रातको दो बार श्री भगवान जीको भोग लगाया जाता है। हर बारका पूजन अनुष्ठान बिभिन्न सामग्रियोंसे अनुष्ठित होता है। श्री जगन्नाथजीका महाप्रसाद हर तरहसे आयूर्वेदसम्मत तथा स्वास्थप्रद है।

इस प्रसिद्ध मन्दिरका निर्माणकालसे इसकी सुपरि-चालनाका भार वंशानुक्रमसे उडिशाके मुख्य शासकोंके ऊपर था। उसके बाद यह दायित्व सैकडों बर्षोंतक खूर्द्धा (उडिसा) के उन गजपति राजाओंके हाथ आया जो आज पुरी राजाके नामसे परिचित है। लेकिन सन १९६० ई० से उडिसा व्यबस्थापिका सभाके द्वारा गृहित "श्री जगन्नाथ मन्दिर प्रबन्धबिधि" नामक एक कानुनके अनुसार इस मन्दिरकी

परिचालना भार उड़िशा सरकारके अधिन एक परिचालक कमेटीके उपर दिया गया है। अब पुरीके गजपति राजा इसके सभापति हैं और पुरीके अतिरिक्त जिला मैजिष्ट्रेट इस कमेटीके सम्पादक तथा श्री मन्दिरके परिचालक हैं।

प्रत्यह श्री जगन्नाथजीको सेबा, पूजा और अर्चनके लिये सहस्र वर्षोंसे नियुक्त "सेबायत" अथबा सेबकोंको उन-उनके सेबा-कार्यानुसार मुख्यतः ३६ भागोंमें बांटा गया है। परन्तु बास्तबमें श्री जगन्नाथजीके सेबाकार्य सिर्फ ३६ न होकर अनेक होनेका कारण इन सेबायत नामधारी पबित्र सेबकोंका बर्गाकरण ३६ नहीं उससे अधिक है। श्री जगन्नाथजीकी सेबा-पूजाएँ इन्हींके द्वारा रोज सम्पन्न होति हैं। और ये सेबक इसे अपना परम तथा पबित्र कर्त्तव्यके रूपमें स्वीकारकर पीढी दर पीढी निमन्ते आ रहे हैं। सिर्फ श्री जगन्नाथजीको ही नहीं, श्रीमन्दिरके अन्तर्गत सभी देब-देबीयोंको पूजा-अर्चना भी इन्हीं सेबकोंके द्वारा सम्पन्न होती है। इन सेबकोंमें प्रत्येकके लिये सेबाकार्य स्वतन्त्र तथा निश्चित रहनेके साथ साथ दूसरेसे सम्पूर्ण मित्र रहता है। नियमानुसार कोइ भी सेबक अपनेलिये उद्दिष्ट सेबाकार्यके व्यतीत किसी दूसरेका सेबाकाय कर नहीं सकता। उसे एसा करनेका अधीकार भी नहीं। अतः श्री जगन्नाथ मन्दिरसे संपृक्त सेबा, पूजा आदि सभी दनदिन नीतिओं की सुपरिचालनाके उद्देश्यसे इन सेबकोंको सम्मिलित रूपसे कार्य करना पडता है। श्रीजगन्नाथजी तथा मन्दिरान्तर्गत

दुसरे देब-देबीयोंको लगनेबाले भोग-प्रसादमेंसे ये सेबकगण अपने-अपनेलिये निर्द्धारित भाग अपने प्राप्यके रुपमें स्वीकार करते हैं। उन्हें उनके सेबाकार्यके लिये वेतन देनेका बिधान बिलकुल नहीं।

सिर्फ श्री जगन्नाथ मन्दिरके लिए ही नहीं, एक पबित्र तीर्थके रुपसे भी पुरीका महान यथेष्ट है। इसका तात्पर्य यह है कि एक भक्त तीर्थयात्री अपने पुरी दर्शनके भीतर इस पबित्र धाममें रहे दूसरे सभी पुरयस्थलोंके दर्शनेका लाभ उठा सकता है। यहाँकि पबित्र बायुका सेबन करनेके साथ-साथ इस पूण्य-धामपर बिराजित मार्कण्डेय आदि पुराणप्रासिद्ध पबित्र पञ्च तीर्थोंमें स्नान तर्पणादि करके अपने शरीर तथा जीबात्माका भी पबित्र बनाता है। पुरीमें स्थित बहु संख्यक पाबन स्थलों-मेंसे कुछ महत्वपूण तीर्थो के नाम इस बिबरण पुस्तिकामें दिये जा रहे हैं।

१- मार्कण्डेय पुष्करिणी (तालाब)

पुरी आए धार्मिक तीर्थयात्री सबसे पहले मार्कण्डेय तालाबमें स्नान करते हैं। इस पुष्करिणीके जलसे कइ पबित्र नदीयोंके जल आकर सम्मिलित होनेके कारण यह एक पबित्र तीर्थ है। पुराणमें बर्णित है कि यह तीर्थ महाप्रलय कालसे बिद्यमान है।

२- महोदधि (समुद्र)

भारत महासागरकी अपार जलराशि जब बङ्गोपसागरमें होकर प्रबाहित होति है तब वह पुरीकी उत्तरी सीमाको स्पर्श करती है। हिन्दुओंके धर्मशास्त्रों तथा पुराणोंमे मिलनेवाले प्रमाणोंके अनुसार यह बर्णन मिलता है कि देबगणोंमे महा-सागरके मन्थनसे लक्ष्मी, अमृत और हलाहल बिषका उद्धार किया था। बरूणकन्या महालक्ष्मीजीको भगवान बिष्णुजी (श्री जगन्नाथजी)को अर्पण किया गया था। अमृत देबताओंमें बितरित हुआ और हलाहलकी बिषमय ज्वालासे धरतीकी सुरक्षाके लिए भगवान शङ्करने बिषपान कर अपनेको नीलकण्ठ नामसे प्रतिष्ठित कियाथा। इन्हीं धार्मिक तथा पबित्र कारणोंसे समुद्रस्नान युगोंसे अति पबित्र माना गया हैं। धार्मिक पबित्रता तथा आत्मिक पुण्यफलोंके अतिरिक्त समुद्र स्नानसे आरोग्य सम्बन्धीय उपकार भी मिलते हैं। पुरीके निकट समुद्र तटबर्त्ति बिशाल वेलाभूमिपर घुमनेसे मनकी संकीर्णताएँ दूरीभूत हो जाती हैं और पुण्यमय भाबनाओंसे मानव हृदय नाच उठता है। अतीव पबित्र स्थल तथा श्रेष्ठ तीर्थ स्थल होनेके कारण धर्मनिष्ठ व्यक्ति इस महोदधिके किनारे श्राद्ध पितृ-तर्पण आदि अनुष्ठान किया करते हैं।

३. श्री मन्दिरस्थित रोहिणी कुण्ड या काक-चतुर्भुज कुण्ड

उपर्युक्त तीर्थ श्री जगन्नाथ मन्दिरके भीतर, बिमला देवीजी के मन्दिरके निकट ही हैं। इस कुण्डके भीतर एक चक्र और एक चारभुजोंवाला कौआ देखनेको मिलता है। इस रोहिणी कुण्डके बारेमें श्री मन्दिरके आदि इतिहाससे सम्बंधित एक बडि रोचक कहानी जुडो हुइ है। वर्णन है कि सबसे पहले श्री जगन्नाथजीकी स्थापनाके लिये राजा इन्द्रद्युम्नने जब श्री मन्दिरका निर्माण करबाया तब उसको प्रतिष्ठा ब्रह्माजीसे करवाना चाहा। इस उद्देश्यसे राजा इन्द्रद्युम्न ब्रह्माजीको मर्त्यपर लाने ब्रह्मालोक गये और बर्षोंतक उन्हें वहाँ रूकजना पड़ा। इस अबधिके भीतर गालमाधब नामक एक राजा इन्द्र-द्युम्नके द्वारा निर्मित मन्दिरपर कब्जा करके उनसे माधब बिग्रहकी प्रतिष्ठा कर उनकी पूजा अर्जना कर रहे थे। कुछ बर्षों बाद ब्रह्माजो सहित इन्द्रद्युम्न जब लौटे तब मन्दिरपर अधिकारको लेकर गाल राजाके साथ उनका बिबाद हुआ। ब्रह्माजो मध्यस्थ थे। राजा इन्द्रद्युम्नकी तरफसे एक कौआ और कछुओंने गबाही देकर यह प्रमाणित करदिया कि मन्दिर गालमाधब राजाके द्वारा नहीं, इन्द्रद्युम्नके द्वारा ही बनाया गया है। इसके बाद ब्रह्माजीके द्वारा मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई और राजा इन्द्रद्युम्नने मन्दिरका सम्पूर्ण दायित्व गालमाधब

राजाको सौंप दिया था। गालमाधव राजाके द्वारा प्रतिष्ठित और पूजित माधवकी वह मूर्त्ति अब भी श्री जगन्नाथजीके निकट रहकर पूजित हो रही है। गवाह देनेवाले कछुओंके वंशधर अब इन्द्रद्युम्न नामक तलावमें देखेनेको मिलते हैं। वह काक (कौआ) चार भुजोंवाल होकर निर्वाण पदको प्राप्त हो गया। इसी रोहणी कुण्डके जलसे पहले नीलमाधवजीको अर्चना-पूजा आदि होती थी, इसलिये इस कुण्डका जल अतिव पबित्र मानाजाता है।

४- श्री जगन्नाथ मन्दिरस्थित कल्पबट

अनादि कालसे श्री मन्दिरके भीतर दक्षिण तरफ एक बटबृक्ष है। उसे कल्पबट या अक्षयबट कहा जाता हे। श्री बालमुकुन्द मदाप्रभु कल्प बटके अधिश्वर है। प्रलयके समय श्री बालमुकुन्दजी बटपत्र पर शयन कर बालकके रूपमें तैर रहे थे। महाप्रलयके समय मार्कण्डेय महर्षिको श्री भगवानने बालकृष्णके रूपमें दर्शन दिया था। यह विश्वास स्थिर है कि सन्तानहीन स्त्रियों श्री मन्दिरस्थित गरूडजीके स्नानजलसे स्नानकर बाल-कृष्णजीको प्रणाम करती हैं और उसके बाद इसी कल्पबटके नीचे आँचल वै फैलाकर बैठी रहती हैं। इससे उनकी मनोकामनाएँ अर्थात् सन्तान-प्राप्तिके मनोरथ सिद्ध होते हैं। साथ हि प्रमाण है कि इस कल्पबटकी छायामें पलभरकेलिए बैठनेसे मानवके सभी पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं। इस बटवृक्षके

नीचे पितृयोंको पिण्डदान करनेसे अक्षय स्वर्गप्राप्ति भी होती है। इस पवित्र वृक्षकी अशेष महिमाएँ हैं। भारतके विभिन्न पुराणोंमें इस कल्पवृक्षका वर्णना देखनेको मिलती है।

५- श्वेतगङ्गा

यह तालाव एक पवित्र तीर्थ है। श्री मन्दिरकी दक्षिण तरफ बालिसाहिके भीतर गङ्गामाता मठके निकटही वह पवित्र पुष्करिणी है। समुद्र स्थानके वाद तीर्थयात्रीयोंके श्वेतगङ्गामें नहानेका बिधान है। क्योंकि इससे शरीरपर लगे लबणांश दूर हो जाते हैं और शरीर बिशुद्ध बन जाती है। इस श्वेतगङ्गाके जलके साथ गङ्गानदीकी जलधारा संयुक्त है। ऐसा मालुम हो चुका हैं।

६- इन्द्रद्युम्न सरोबर

श्री मन्दिरको प्रतिष्ठाके बाद महाराज इन्द्रद्युम्नने कई सहस्र गौओंका दान किया था। उन गौओंको श्री गुण्डिचा मन्दिर (जनकपुर)के पास यहाँ एकत्रित किया गयाथा। वहाँकी मिट्ठी गौयोंके खूरेसे खूदकर एक प्रसाम्त गड्ढा बनागया था और उसमें गोमूत्र भरकर एक तालाब जैसा दिखाई देने लगा। इसी सरोबरका नाम इन्द्रद्युम्न है। इस तीर्थका जल अतीव पवित्र होता है। इस तालावमें बहुत बडे-बडे कछुवे रहते हैं। धर्मप्राण यात्रीगण इसमें स्नानकर अपनेको परम सुखी तथा पवित्र समझते हैं। यह सरोबर जनकपुर (श्री गुण्डिचा मन्दिर) के ठीक पीछेकी ओर है।

७- नरेन्द्र तालाव (चन्दन तालाव)

यह तालाब श्री जगन्नाथजीके जलक्रीड़ा (केली) सरोबरके नामसे प्रसिद्ध है। उत्कलके महा बिक्रमशाली गजपति मम्राट कपिलेन्द्र देबके पुत्र गजपति नरेन्द्र देबने अपने पुत्र पुरूषोत्तम देबके हाथों साम्राज्यका समस्त दायित्व समर्पण कर अपनेलिये उद्दिष्ट अर्थोंसे यह प्रसिद्ध तालाव खुदबाया था और अपनी पत्नीके साथ इसके तटपर जोवनके शेष अंश बिताये थे। वैशाख शुक्ल तृतीयासे लेकर २१ दिनोंकी चन्दनयात्रा (जलबिहारत्सब) के समयपर रोज श्री जगन्नाथजी इस तालावमें नौकाबिहार करते हैं। इससे इस सरोबरकी बहुस पबित्र मानाजाता है। इसलिए पुरी आनेवाले धर्मप्राण व्यक्ति इसमे नहाना या कमसेकम इसके जलोंको सिरपर छिडकना नहीं भूलते हैं।

कहा गया है कि श्री जगन्नाथजीके दर्शनकी बात तो दूर रही, पुरीके बड़ेदाण्ड (प्रध नमार्ग) पर और श्री मन्दिरके भीतर पदचारण मात्रसे ही अपार पुण्योंका फल मिलजाता है। इस मार्गके प्रत्येक रजकणमें पुण्यमय परमाणुशक्ति भरी रहती है। इसपर भ्रमण करते समय भक्तोंके प्राण श्री मन्दिरकी ओर आपसे आप खीचे जा हैं। पलभरकेलिये ही सही, यह संसारके सभी आकषणको भूलकर शाश्वत भक्तिभावनाओंसे तन्मय हो जाता है। थोडि ही दूरपर श्री मन्दिरके शिखरपर स्थित सुरक्षा और महा प्रलयका परिचायक निलचक्रके दर्शनसे उसका

उन्नत मस्तक अपने आप झूकजाता है। यह धर्मचक्र अपनी शक्तिसे सत्य और धर्मके अनुयईयों जिसप्रकार सभी आपदायोंसे रक्षा करता है, ठीक इसी प्रकार असद्पथगामी अधार्मिकोंको हर प्रकारसे बिनाश करनेका शक्ति रखता है। इस पबित्र सर्वशक्तिमान् नीलचक्रपर जो झण्डा पहराती है उससे जीबनका अभ्युदय प्रत्येक दिशाओंसे होता रहता है।

अब श्री मन्दिरके निकट और उसके भीतर रहनेवाले मुख्य स्थानों तथा तीर्थ स्थलोंकी बर्णना क्रमशः दिया जा रहा है।

१- अरुणास्तम्भ

भगवान सूर्यका यह स्तम्भ श्री मन्दिरकी पूर्वदिशा अर्थात् सिंहद्वारके सम्मुख भागपर स्थित है। पहले यह कोणार्क मन्दिरके सम्मुख था परन्तु कुछ बर्षोंके बाद उडिसाके मुख्य मराठा शासक या ब्रह्मचारीके द्वारा यह स्तम्भ पुरी लाया गया और श्री मन्दिरके सामने रखागया इससे ज्योतिर्लोक अरुण दर्शनकी सूचना मिलती है। इस स्तम्भसे भगवान सूर्यका शक्तिका उद्भब होता है। भक्तगण इस स्तम्भको छुनेके बाद श्री जगन्नाथ दर्शनके लिये अग्रसर होते हैं।

२- मेघनाद प्राचीर

अरूण स्तम्भसे सिंहद्वार होकर आगे बढते समय श्री मन्दिरके बाहारी अहातेको घेरे हुए जो प्राचीर (चार दीवार)

दिखाइ पडता है वही मेघनाद प्राचीर हैं। यह मन्दिरकी चारों तरफ घिरा है। इसकी ऊँचाई २२ फूट और मोटाई ६ फूट ५ ईच है। इस प्राचीरके ही कारण निकटवर्त्ती समुद्रका भयानक गर्जन मन्दिरके भीतर सुनाई नहीं पडता यही इसकी बिशेषता है।

किम्वदन्ती है कि एकवार श्री जगन्नाथजी और उनकी पत्नी महालक्ष्मीजीके भीतर दाम्पत्य कलहका सूत्रपात हुआथा। परिहास करते हुए भगवानने लक्ष्मीजीसे कहा "सर्बदा गरजने-वाले सागरको कन्या होनेके कारण तुम भी कलहप्रिया हो। उससे जगन्माता श्री लक्ष्मीदेबी अपमानिता हुई और उनके द्वारा यह बिशाल प्राचीर निर्माण करबाया गया। उस दिनसे बाहरकी आवाज श्री मन्दिरमें आ नहीं सकती। इसलिये दर्शनाभिलाषी भक्त मन्दिरमें प्रवेश करते समय इस मेघनाद प्राचीरके निकट पलभरके लिए खडे होकर अपना सिर झुका लेते हैं। क्योंकि इसमें ब्यबहृत प्रत्येक प्रस्तरखण्ड शब्दरोधक शक्तिसम्पन्न तथा स्वकीय गुणोंसे भरा है।

३- सिंहद्वार

दर्शनाभिलाषी भक्तोंके लिये श्री जगन्नाथ मन्दिरमें जाने-आनेका मार्ग श्रीमन्दिरका पूर्वद्वार व सिंहद्वार हैं। इस दरबाजेके दोनों तरफ दो प्रकाण्डकाय सिहोंकी मूर्त्तियाँ हैं। इसलिये यह सिंहद्वारके नामसे परिचित हैं। मोक्षलाभ तथा

स्वर्गप्राप्तिके संकेत इस द्वारपर निहित हैं। महाबीर हनुमानजी इस सिंहद्वारके द्वारपाल देबताके रूपमें अधिष्ठित है।

४- पतित पावन

श्री जगन्नाथजीका अन्य नाम पतित पावन भी है। इसका तात्पर्य यह है कि ये समाजमें अस्पृश्य, घृणित और पतित जनोंके उद्धारकर्त्ता हैं। इन्हीं पतितजनोंके लिये स्वयं जगन्नाथजी पतितपावन नाम धारण कर सिंह दरवाजेके सामने इस प्रकार बिराजित है कि कोई भी व्यक्ति श्री मन्दिरके अन्दर न जाकर बाहरसे ही उनके दर्शनका लाभ उठा सके। समाजमें पतित तथा दूसरे धर्माबलम्बीयोंके लिये ही यहाँ भगवानका पतित पावन रूप बिराजित है।

किम्बदन्ती है कि कुछ मुसलमान शासकोंने मिलकर गजपति राजा द्वितीय रामचन्द्रदेबको इसलाम धर्म ग्रहण करनेके लिये बाध्य किया था। परन्तु गजपति आजिबन श्री जगन्नाथ जीके एक परम भक्त तथा सेबक थे। इसलिये मुसलमान शासकोंके दबबसे श्री मन्दिरमें प्रबेश नकर सभी केवल पतितपावन जीके दर्शन प्रतिदिन करके उन्होंने अपने कर्त्तव्यका पालन किया था।

५- विश्वनाथ मन्दिर

यह मन्दिर श्री मन्दिरकी प्रसिद्ध बावीस सीडियोंके निकट हि बाई तरफ है। योग साधनाके नियमानुसार

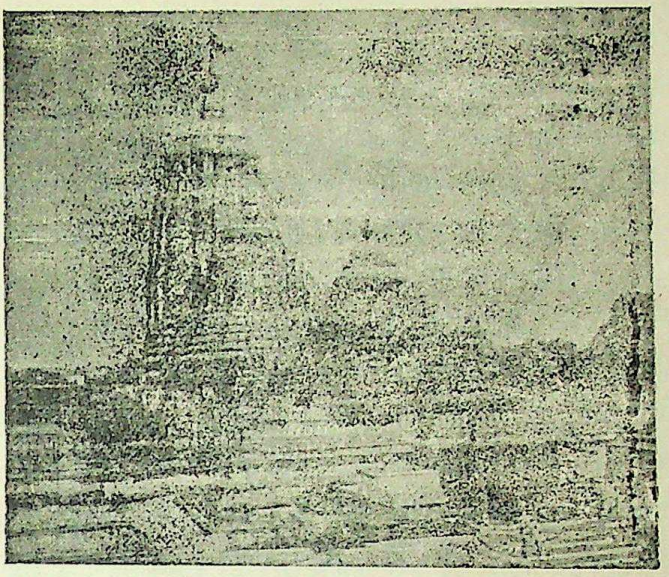

श्री जगन्नाथ मन्दिर

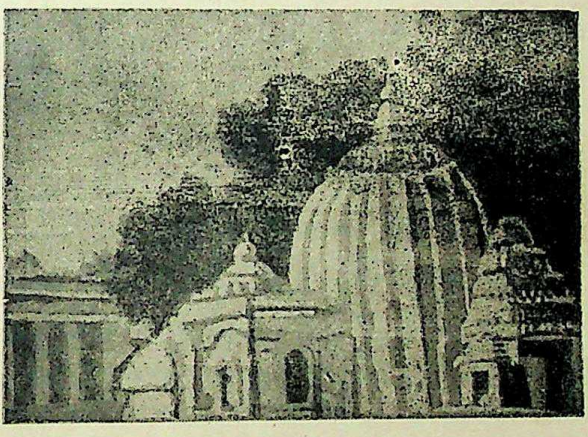

श्री लोकनाथ मन्दिर

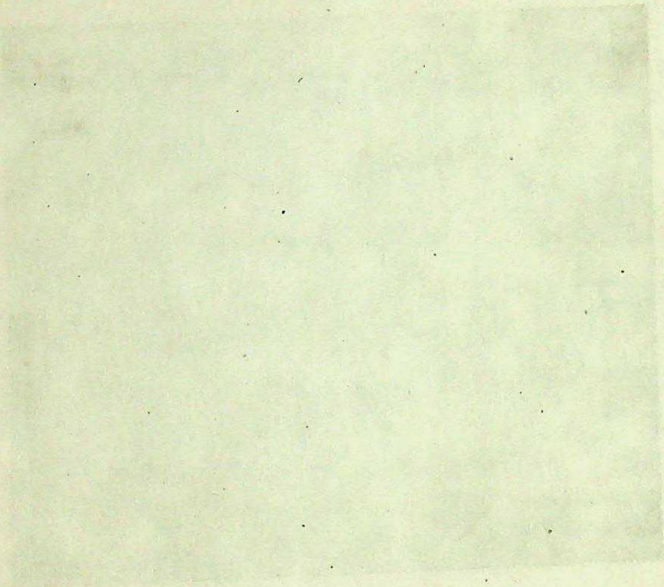

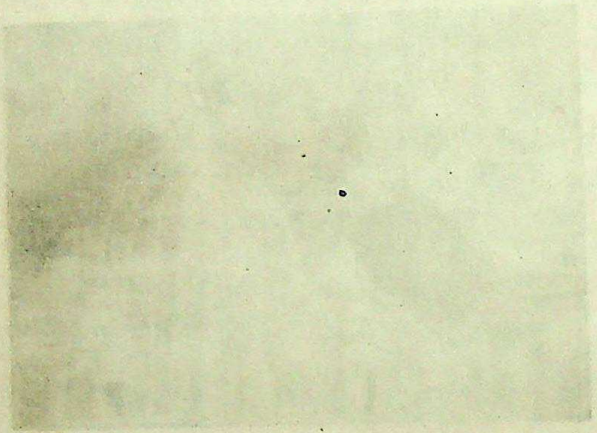

पहले योगेश्वर भगवान शिवजीके दर्शन करनेके बाद श्री जगन्नाथजीके दर्शन करनेका विधान है। अतः काशीधामके श्री विश्वेश्वरजी मन्दिरके बाबीस पाबच्छ (बाबीस सिड़ियों) के प्रवेश पथ पर ही विराजित हैं। मन्दिरके भीतरकी ओर अग्रसर होने पूर्व भक्तगण यहाँ सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं।

६- बावीस पावछ (बावीस सीड़ियाँ)

प्रत्येक मानवके भीतर २२ प्रकारका दोषदुर्बलताएँ होती हैं और वे उसका मोक्षप्राप्त तथा निर्वाणप्राप्तिमें घोर अन्तराय (रूकवटें) बनकर आती हैं। अतः श्री जगन्नाथजीके दर्शनके पहले प्रत्येक मानवको इन दोष-दुर्बलताओंका त्याग करना चाहिये। ये बाबीस सिड़ियाँ एकक बाद एक इसि क्रमानुसार बन ई गई है। एकके बाद एक प्रत्येक सीड़िपर निर्द्धारित योग साधनासे मानबको अपने सभी पाप तथा दोषदुर्बलताओंका बर्जन करना पडता है। इसी कामसे जब वह एक एक करके सीड़िओं को पार कर अन्तिम सीड़ि (सोपान) पर पहुंचजाता है तब उसकी साधन की पूर्त्तिहोती है। अतः जो धर्मप्राण व्यक्ति पूर्ण तथा दृढ़ धर्मविश्वासके साथ इन सोपानोंको अतिक्रम करके श्री मन्दिरमें प्रबेश करते हैं, उनके सभी पाप इन बाबीस सोड़ियोंपर ही नष्ट हो जाते हैं। साथ ही बिधान है कि इन बाबीस सीड़ियोंपर पितृओंका श्राद्ध कर उन्हें पिण्ड दान करनेसे पितर तृप्त हो कर अक्षय स्वर्गधामको प्राप्त होते हैं।

७- कुर्म वेढ़ा

बावीस पाबछकी अन्तिम सीड़िपर पहुँचतेही श्री मन्दिरमें प्रवेशकारी व्यक्तिकी सामने एक प्रवेशद्वार और दोनों बाजुओंमें और दो प्रवेश द्वार दिखाइ पड़ते है। बाजुवाले ये दो प्रवेशद्वार श्री मन्दिरके बाहरी वेड़ा या घेरेकी और पथका निर्द्देश देते हैं और सामनेवाला प्रवेशद्वार श्री मन्दिरके भीतरकी और मार्ग दिखलाता है। श्री मन्दिरका यह भीतरी भाग कूर्माकृति (कछुअेकी पीटके समान) है। इसलिये इसे "कूमवेढ़ा या कछूअ घेरा कहते हैं। कूर्मवेढ़ा श्री महाशम्भुजीके श्री यंत्र या बिषयंत्रकेलिये बहुत ही पबित्र स्थान होता है। इस भागमें बाई तरफसे गति करके भगवान दर्शन करनेकी विधि शास्त्र सम्मत है।

८- अग्नेयेश्वर मन्दिर

इस मन्दिरके मुख्य देवता श्री अग्नेयेश्वर महदेवजी हैं। ये कुर्मवेढ़ाके प्रतिपालक देवता हैं।

९- श्री सत्यनारायणजीका मन्द्रिर

शास्त्रीय विधिके अनुसार किसी आध्यात्मिक साधनाके प्रारम्भके पूर्व शुक्लाम्बरधर श्री विष्णुजीके दशन करनेका नियम है। मोक्षलाभकेलिये इस साधनाको बडी आवश्यकता है और यह अन्नमें श्री जगन्नाथजीके दर्शनसे प्राप्त होता है।

९०- कल्पगणेश मन्दिर

श्री जगन्नाथ मन्दिरमें बिराजित कल्प गणेश चिन्तामणि गणेश तथा सिद्ध गणेशके नामसे भी प्रसिद्ध है। वैदिक विधिके अनुसार दुसरे सभी देव-देवीयोंमें श्री गणेशजी अग्रपूज्य है। पुरीके श्री जगन्नाथ मन्दिरके निर्माणके बाद तथा इस मन्दिरकी प्रतिष्ठाके पहलेसे सर्वप्रथम इस गणेशकी पूजाकी गई थी। पुराणोंसे यह सूचना मिलती है कि जो व्यक्ति इस चिन्तामणि गणेशजीके निकट श्री गणेशजीके बीज मंत्रका जप १०८ बार करता है उसकी सारी मनोकामनाएँ पुरी हो जाती है।

९९- सर्वमङ्गला मन्दिर

सर्वमङ्गला, बिमला, उत्तरायणी और भुवनेश्वरी आदि देबी प्रतिमाएँ सबशक्तियोंका आधारस्वरूपा होती है। शक्तिके बिना जगतकी सारी बस्तुएँ निष्क्रिय तथा जड़ बनी रहती हैं। इसलिये चिन्तामणि गणेशजीके द्वारा अनुगृहित होनेके बाद भक्तगण शक्तीलाभके उद्देश्यसे जगदम्बा सर्वमङ्गलाजीका आराधना करते है। मत्स्य पुराणके अनुसार सर्वमङ्गला तथा साधनाका श्रेष्ठ पीठ है।

९२- पञ्चपाण्डव मन्दिर

उत्कलके महाकबि सारलादासजीके द्वारा रचीत महा-भारतमें यह बर्णन कीया गया है की जब पञ्चपाण्डव वनबास

कर रहे थे तब उन्होंने सभी बाधा-विघ्नोंको सहजही अतिक्रम कर जानेके उद्देश्यसे इसी स्थानपर श्री जगन्नाथजीसे प्रार्थना की थी। उन दिनों उन पाञ्च माईयोंकी कल्पनानुसार पाञ्च शिवलिङ्ग वहाँ आविर्भूत हुए थे। इसलिये यहाँपर विराजित पाञ्च शिवलिङ्ग पञ्चपाण्डवके नामसे प्रसिद्ध हैं।

९३- अनन्त वासुदेव मन्दिर

इस मन्दिरमें आदि शेषदेवजीका श्री विग्रह स्थापित है। यहाँ भाद्रवमास शुक्ल एकादशीके दिन बहुत बडा उत्सव अनुष्ठित होता है।

९४- महाबज्रेश्वरी मन्दिर

देवी महाबज्रेश्वरी श्री पुरुषोत्तम क्षेत्रके क्षेत्रपाल शिवजीकी शक्ति स्वरुपा हैं। देवी महाबज्रेश्वरी इन्द्राणी देवीके नामसे मां परिचित हैं।

९५- कुताम चण्डि

प्रत्येक देवदेवीयोंको भोग लगानेके ऊपरींत चण्ड नैवेद्यका बिधान है। शक्ति पीठमें श्वान भैरवी चण्ड नैवेद्यकी अधिकारिणी देवी है। तांत्रिक पूजा पद्धतिके अनुसार चण्डनैवेद्यके समर्पणके लिये इस चण्डिमूर्त्तिकी स्थापना पहले श्री जगन्नाथजीके रत्नसिंहासनके पार्श्वद्वारमें हुई थी। किन्तु बादका

वैष्णवोंके प्रभावसे इस मूर्त्तिको वहाँसे हटाकर इस मन्दिरमें स्थापित किया गया है।

९६- सूर्य्ययंत्र मन्दिर

श्री जगन्नाथ मन्दिरमें सर्वप्रथम उदयकालीन सूर्यकी उपासना और पूजा प्रत्यह होती है। उसके बाद मन्दिरकी दूसरी सारी नीतियाँ होनेकी पद्धति प्रचलित है। आदि ब्रह्म-पुराणके अनुसार इसी मन्दिरमें सूर्य यंत्र खोदित हुआ है।

९७- क्षेत्रपाल मन्दिर

शिवलिङ्ग ही क्षेत्रपाल हैं। क्षेत्रपाल जो भैरवके नामसे भी प्रसिद्ध है। श्री जगन्नाथजीके दर्शन करके तृप्ति होने के लिये इसी देवताकी सम्मति ली जाती है। श्री क्षेत्रपाल शिवजी श्री मन्दिर तथा श्रीक्षेत्रके रक्षक है।

९८- (ब्रह्मासन) मुक्तिमण्डप

श्री जगन्नाथ मन्दिरके निर्माण कालमें शिल्पीयोंको आवश्यक निर्देश दे चुकनेके बाद निर्माण कार्यकी देखरेखक उद्देश्यसे शायद ब्रह्माजी यहींपर अवस्थान किया करते थे। इसलिये मुक्तिमण्डप अत्यन्त पवित्र स्थानके रूपमें मानाजाता है। आज कल यह मण्डप श्री मन्दिरमें बिद्वान ब्राह्मणोंके बैठनेका स्थान है। इस मण्डपपर बैठकर बिद्वान पण्डितगण

धर्म सम्बंधिय शास्त्रोंकी आलोचना कर शास्त्रीय बिधि-व्यबस्थाओंका निर्द्देश दिया करते हैं। माता श्री बिमला देवीजीके मन्दिरके पीछेकी ओर इस मुक्तिमण्डप पर शास्त्रोंकी आलोचना अध्ययन आदि करनेवाले पण्डितोंके लिये एक मूल्यवान तथा प्रकाण्ड पाठागार पुरी मुक्तिमण्डप पण्डित सभा कार्यालयके नामसे परिचित है।

९१- यज्ञनृसिंह बा मुक्तनृसिंह मन्दिर

यज्ञनृसिंह तथा मुक्तनृसिंह श्री मन्दिरके अन्यतम मुख्य देवताके रुपमें पूजित होते है। श्री मन्दिर प्रतिष्ठाके समयपर यज्ञनृसिंहकी उपासना करना शास्त्रीय बिधि सम्मत मार्ग है। इसलिये मुख्य मन्दिरकी प्रतिष्ठाके पूर्ब महाराजा चोड़गङ्गदेवने इस नृसिंह मन्दिरका निर्माण कराकर इसमें यज्ञ नृसिंहजीकी प्रतिष्ठा की थी। इस विषयसे संपृक्त शिलालेख इस मन्दिरमें देखनेको मिलता है।

२०- जलक्रीडा मण्डप

इस मण्डपपर श्री जगन्नाथजीका जलक्रीड़ा उत्सव अनुष्ठित होता है।

२९- बिमला देबीजीका मन्दिर

भगवती बिमला देबी श्री मन्दिरकी मुख्य अधिष्ठात्री देवी है। देवी पुराणमें बर्णित है कि दक्षयज्ञके बाद शीवजीके

शक्तिको (यज्ञकुण्डमें आत्माहूति देनेवाली सतीके मृत शरीरके) लिये घुमते समय आदिशक्तिका पादभाग यहाँ गिरा था। इससे यहाँ महाशक्ति स्वरूपिणी बिमला आबिर्भुता हुइ। इसि कारणसे भगवती बिमला महाभैरबी आदिशक्ति है।

कहा गया है कि श्रीमन्दिर निर्माणके बहुत दिनोंके बाद ही श्री जगन्नाथजीको उसमें प्रतिष्ठित किया गया था। मन्दिर निर्माणके बादसे लेकर श्री जगन्नाथजीकी प्रतिष्ठातकके समयके भीतर भगवती बिमलाजी श्री मन्दिरकी अधिकारिणी रही। अंतमें जब श्री जगन्नाथजी आकर श्री मन्दिरमें उपस्थित हुए तब उन्होंने देखा कि मन्दिर बिमला देबीके अधिकारमे है। अतः उन्हें मन्दिरमें प्रवेश करनेकेलिये बिमला देबीसे अनुमति लेनी पड़ि। बिमला देबीने उन्हें इस एक शर्त्तपर अनुमति दी थे की प्रत्यह प्रत्येक भोगका नैवेद्य श्री जगन्नाथ तथा बलभद्र-जीको समर्पित होनेके बाद उन्हें भी अर्पित होगा इस शर्त्तके मुताबिक उसी दिनसे श्री जगन्नाथजी तथा बलभद्रजीको समापत नैबेद्य बिमलाजीको भी समर्पित किया जाता है। तांत्रिक साधनाके अनुसार इस मन्दिरमें सारी पूजाएँ महा-शाक्तसे सम्भूता कालिका देबीके की जाती है।

२३- योगेश्वर मन्दिर

इस मन्दिरमें भगवान शङ्कर तथा श्रीकृष्णजीके परिवार वर्ग पूजित हो रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि शैब तथा

वैष्णव एक साथ साधना और भजन आदि कर सकते हैं और प्रभु योगेश्वरजी महाशिव तथा महाविष्णुके दोनों रूपमें प्रकाशित हो सकते हैं।

२३- साक्षीगोपाल मन्दिर

उत्कलके गजपति सम्राट तथा श्री जगन्नाथजीके परम भक्त श्री पुरुषोत्तम देवने श्री जगन्नाथजी और बलभद्रजीकी सहायतासे काञ्चि नरपतिसे युद्ध करके विजय हासिल की थी। काञ्चसे लौटते समय गजपति पुरुषोत्तमदेव अपने साथ साक्षीगोपाल जीको साथ ले आऐ थे। पहले उन्होंने इस मूर्त्तिकी स्थापना श्री मन्दिरमें की थी, परन्तु उसके बाद यह देवता पुरीसे १३ मील दूर साक्षीगोपाल नामक स्थानपर प्रतिष्ठित हुए। अतः आजकल इन दोनों मन्दिरमें साक्षी-गोपालजीके दर्शन मिलते हैं।

२४- कांचि (कुंजवरम्) गणेशजीका मन्दिर

काञ्चि नरेशको युद्धमें पराजित कर गजपति पुरुषोत्तम देव काञ्चिकी राजकुमारी पद्मावतीजीको अपने साथ ले आये थे। उनके साथ उनके इष्ट श्री गणेशजीको भी साथ ले आऐ थे। काञ्चिके यह गणेशजी कदम गणेशके नामसे परिचित हैं। इन्हें श्री जगन्नाथ मन्दिरके पीछे स्थापित किया गया है। इनिकी निर्माण कर्णाटकी शैलीपर हुआ है और कुम्भकोणमूके गणेशजीके साथ इस गणेश विग्रहकी काफी समानता हैं।

२५- क्षीरचोरा गोपीनाथ मन्दिर

इसमें गोपीनाथजीका बिग्रह स्थापित है।

२६- पञ्चशक्ति मन्दिर

शक्ति पूजाके क्रमानुसार पाँच आदि मातृकाओंकी पूजा उपासना की जानेकी बिधि है। ये पञ्च मातृकाएँ क्रमशः सरस्वती, गायत्री, षष्ठी और भुवनेश्वरी आदि देबियाँ है। इन्हें पञ्चलोक मातृका भी कहाजाता है। इस मन्दिरमें इन पञ्चमातृकाओंकी स्थापना की गई । कूर्म वेढ़ाकी परिक्रमा करते हुए दर्शनार्थी भक्तगण इन पञ्चशक्तियोंके निकट प्रणाम करना नहीं भूलते।

२७- नीलमाधब मन्दिर

शवर राजा बिश्वाबसुने पहले यहींपर श्री नीलमाधब जीकी पूजा की थी। बादको वे महानदीके तीरबर्त्ति कण्टिलो नामक स्थानपर नीलमाधबजीको ले गए। इसि स्मृतिके अनुसार यहाँ नीलमाधबजीकी मूर्त्ति अबस्थापित है।

२८- यंत्र कालिका मन्दिर

यहाँ प्रसिद्ध तांत्रिक कालिका यंत्र पूजित हो रहा है। पबित्र यंत्रधारिणी महामाया कालिका देबी इस श्री मन्दिरकी अन्यतम मुख्य देबी हैं।

२९- श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर

यहाँ लक्ष्मी तथा नारायणके देव बिग्रह पूजित हो रहे हैं।

३०- महालक्ष्मी मन्दिर

श्री जगन्नाथजीके मुख्य मन्दिरके साथ साथ राजा चोडगङ्ग देवने इस मन्दिरका भी निर्माण करवाया था। इसलिये मुख्य मन्दिरकी स्थापत्य कलाके साथ इस मन्दिरकी स्थापत्य-कलाका पूरा-पूरा सामञ्जस्य दिखाइ पड़ता है। महालक्ष्मीजीके मन्दिरका जगमोहन "त्रिपाद बिभूति वैकुण्ठ मणिमण्डप" के नामसे परिचित है। यहाँ सनातन धर्म सम्बंधीय धार्मिक आलोचनाचक्रका अनुष्ठान होता है। महालक्ष्मीजीके दशनार्थीओंके यहाँ थोडी देरके लिये मातृ-क्रोढमें बिश्राम करनेकी प्रथा है। अतः महालक्ष्मीजीके दर्शनोपरान्त भक्तगण इस जगमोहनमें थोडी देरके लिये बैठजाते हैं और लक्ष्मी मंत्रका जप किया करते हैं। इसी मन्दिरके भीतर श्री लक्ष्मीनृसिंहजीकी मूर्त्ति बिराजित है। साथ ही आदि शङ्कराचार्य जिस लक्ष्मीनृसिंह बिग्रहकी पूजा-आराधना किया करते थे वह बिग्रहभी इसी मन्दिरके भीतर है। इस लक्ष्मीनृसिंह बिग्रहके पददेशमें आदि शङ्कराचार्यजीकी प्रतिकृति भी देखनेको मिलती है।

३१- नवग्रह मन्दिर

यहाँ नवग्रह पूजित होते हैं। दुसरे नवग्रह मन्दिरोसे इस मन्दिरका बिशेषत्व यह है कि ग्रहगण बिपरीत क्रमसे स्थापित तथा पूजित हैं। दूरो का दृष्टिसे पृथिबी और सूर्यके भितर दुरत्वका व्यबधान सबसे अधिक है। इसलिये क्रमशः सभी ग्रहोंकी पूजाके बाद यहाँ सूर्यग्रहकी पूजा की जाती है। यही है, इस मन्दिरमें ग्रहोंकी अबस्थितिओंका बिशेषत्व।

३२- चन्द्र मन्दिर

यहाँ भगवान चन्द्रमाकी बिशेष पूजा होती है।

३३- गोपीनाथ और रामचन्द्र मन्दिर

यहाँ रामायण और महाभारत युगका सुन्दर संयोग तथा समन्वय किया गया है।

३४ - पातालेश्वर मन्दिर

गङ्गवंशीय नरपति अनङ्गभीमदेवके द्वारा यह मन्दिर निर्मित हुआ था। पातालेश्वर महादेवजी इस मन्दिरके अधीश्वर देवता है। लगभग सभी गजपति सम्राटोंके शिलालेख इस मन्दिरमें है।

३५- पादपद्म मन्दिर

भगवान श्री चैतनदेवका पदचिह्न पहले श्री मन्दिरके जगमोहनमें गरुडस्तम्भके ठीक पीछे था। अब यह इस मन्दिरमें सुरक्षित है। इसलिये रामानुजीय वैष्णवोंकेलिये यह बहुतही पबित्र स्थान है। बिभिन्न कीर्त्तन मण्डलियोंके द्वारा यहाँ नाम संकीर्त्तन किया जाता है और यहाँ लक्ष्यदीप या लक्ष्यबतियाँ जलानेसे मनुष्यको चतुबर्गके फल मिलती हैं।

३६- सारी देवल या रामचन्द्र मन्दिर

यहाँ रोज रामायणकी चर्चाएँ होती हैं और यहींपर बिभीषणके द्वारा श्री जगन्नाथकीजी बन्दापना होती हैं।

३७- श्री चैतन्यदेव मन्दिर

श्री चैतन्यदेवसे श्री मन्दिरमें प्रवेश करते समय सर्वप्रथम इसी स्थानपर कीर्त्तन प्रारंभ किया था। गजपति प्रतापरुद्रदेब प्रतिदिन इसी स्थानपर सत्संग किया करते थे। उसी घटनाकी यादगारमें इस मन्दिरमें श्री चैतन्यदेबकी प्रतिमूर्त्ति स्थापित है।

३८- भोगमण्डप मन्दिर

इसिकि पन्द्रहवींसदीमें उत्कलके गजपति पुरुषोत्तम देवके द्वारा इस चारुकलापूर्ण अनुपम भोगमण्डप मन्दिरका

निर्माण किया गया था। इसके निर्माणके पहले यहाँ श्री शङ्कराचार्यजी जगन्नाथजीसे प्रार्थना आदि अनुष्ठान किया करते थे। इसलिये इस मन्दिरका दूसरानाम गोबर्द्धन पीठ है। इस मन्दिरके गात्रमें उडिआ गजपति महाराजाओंके राजकीय उत्सवोंकी प्रत्थरोंपरो खोदित तस्वारें मिलती हैं। यहाँ दुर्गा-माधव बिग्रहको स्थापनाभी की गई है।

३१- शिखर निशा मन्दिर

श्री मन्दिरके भीतर प्रवेश करनेके पूर्व दर्शकोंको मुख्य-मन्दिरसे सटकर उसकी तीन दिशाओंमें तीन निशा मन्दिर दिखाई पडते हैं। इन निशा मन्दिरोंमेंसे दक्षिण वाजुवाले मन्दिरमें बराहकी, पश्चिम वाजुवाले मन्दिरमें श्री नृसिंहकी और उत्तरी तरफ वाले निशामन्दिरमें भगवान त्रिबिक्रमजीकी बिशालकार्य मूर्त्तियाँ स्थापित है। ये मूर्त्तियाँ काले चिकन पत्थरकी बनी हैं और इनपर की गई मूख्य तथा सजीव कलात्मक अभिव्यक्ति, निखार और सौन्दर्य बेजोड हैं। उडिशाकी स्थापत्य कलाओंमें ऐसी सूक्ष्मतम अभिव्यंजना बहुत कम पाई जाता है।

४०- देवसभा मण्डप

अगर देबताओंके द्वारा श्री जगन्नाथजीसे किसी समस्यापर प्रार्थना की जाती है तो उस समस्याके समाधानके

हेतु देवगण, ऋषिगण, स्वर्गकी नर्त्तकीयाँ तथा स्वर्गलोकबासी दर्शकगण श्री मन्दिरस्थित इसी स्थानपर एकत्रित होकर आपसमें बिचार बिमर्श और आलोचनाएँ किया करते हैं। यहाँ देवसभा बैठती है। इसलिये यह स्थान अत्यन्त पबित्रमय है।

४१- मदनमोहन मन्दिर या दक्षिणद्वार

मदनमोहन तथा श्री जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्राजीकी चलती प्रतिमाएँ यहाँ पूजित होती है। स्नानयात्रा तथा रथ-यात्राके व्यतीत शेष सभी यात्राओंमें मन्दिरके बाहार श्री मदनमोहनजी जगन्नाथजीका प्रतिनिधित्व करते है। स्नानयात्रा और रथयात्राके सिबाय दूसरी सभी यात्राओं, पर्ब तथा त्यौहारोंमें प्रतिनिधित्व करनेवाली देब-देबीयोंकी सभी प्रतिमाएँ यहाँ रहकर पूजित होती है।

४२- मार्जना मण्डप

हर बृहस्पतिबारके दिन इसी मण्डपपर श्री मदनमोहन महालक्ष्मी और सरस्वति प्रतिमाओंके श्री अङ्गोकी मार्जना (स्नान आदि) की जाती है। यह मण्डप 'रूक्मिणपरिणय' मण्डपके नामसे भी प्रसिद्ध है।

४३ - नाभिकटा (नाभिछेदन) मण्डप

जन्नाष्टमीके दिन इस मण्डपपर शिशु श्रीकृष्णजीकी नाभि काटी जाती है।

४४- गारद्

श्री जगन्नाथ मन्दिरके मुख्य परिचालकजीका प्रधान कर्यालय पुरी राजमहलके सामने बडदाण्ड (प्रधानमार्ग) पर है। परन्तु श्री मन्दिरकी अभ्यन्तरिण सुपरिचालनाकी दृष्टिसे परिचालकजीके कार्यालयकी एक शाखा श्री मन्दिरके जग-मोहनमें प्रवेश करनेवाले द्वारकी बाईं तरफ, श्री मन्दिरके ही भीतर, गारदके नामसे रहती है। मन्दिरके आदेशकर्त्ता और मुख्य कर्मचारी यहींसे अपना-अपना कार्यनिर्बाह किया करते हैं। यहाँपर धर्मप्राण व्यक्ति, तीर्थयात्री और दूसरे लोग भी मन्दिरके भीतर अपनी आवश्यकताओं तथा असुबिधाओंके सम्बधमें बिचाराविमर्श या उचित कर्याबहीके लिये परि-चालकजीके साथ सम्पर्क रख सकते हैं। यहाँ एक टैलिफोन (फोन नम्बर-१) हैं। श्री मन्दिर कोष या श्री मन्दिर सुरक्षा बिधि तथा मन्दिरसे संपृक्त परिमाणिक, शुल्क आदि रकम यहाँ जमा दिआ जा सकती है। इस स्थानके व्यतीत ऐसी रकम प्रधानमार्गपर स्थित मन्दिरके प्रधान कार्यालयमें भी स्वीकार की जाती हैं। मन्दिरके सम्बधमें जानकारी हासिल करनेवाले व्यक्ति भी इस गारद आफससे मन्दिर संपर्कीय जानकारियाँ पा सकते हैं। श्री जगन्नाथ मन्दिरके कार्यालयका मुख्य बिभाग जो पुरीके प्रधानमार्गपर है, उसकी एक दूसरी शाखा इसी कुम (भीतरी वेढाके भीतर, भोगमण्डप मन्दिरकी

बाइं तरफ आनन्दबाजार जानेकेलिये स्थित प्रवेशमार्गके पश्चिमें अवस्थित है।

४५- जगमोहन

श्री जगन्नाथजीके रत्नसिंहासनके सामनेवाले स्थानको जगमोहन कहा जाता है। इस जगमोहनके भीतर भगवान विष्णुके २४ अवतारों, दशअवतारों, चारधाम, दशमनुओं, दश दिगपालों, अष्टवसुओं, नवग्रहों और जय-विजयके प्रस्तर खोदित विग्रह और सुन्दर सुन्दर चित्र समूह हैं। साथ ही इसमें कई शिलालेख भी हैं।

४६- गरुड स्तम्भ

यह स्तम्भ गरुडगङ्गाके पवित्र गरुडोद्गारमणि शिला) से बनाया गया है। इसपर गरुडजीकी मणिमय भव्यमूर्त्ति सविनित प्रणिपातकी मुद्रामें नतजानु आसीन है। गरुडजी श्री जगन्नाथजीके वाहन हैं। इसलिये स्थंभपर विराजित गरुडजीकी दो आखें श्री जगन्नाथजीके श्रीचरण कमलोंपर चिर सन्नद्ध है। इसि कारणसे रत्नसिंहासन (रत्नवेदीका) की ऊँचाईके अनुसार स्तंभपर स्थित गरुडजीकी अवस्थितिकी समता रखीगई है। कथित कि इसी गरुडस्तंभके पिछेसे श्री जगन्नाथजीके दर्शन करके श्री चैतन्यने मोक्षलाभ किया था। अब भी गरुडस्थंभके ठीक पीछेकी और भोगमण्डप

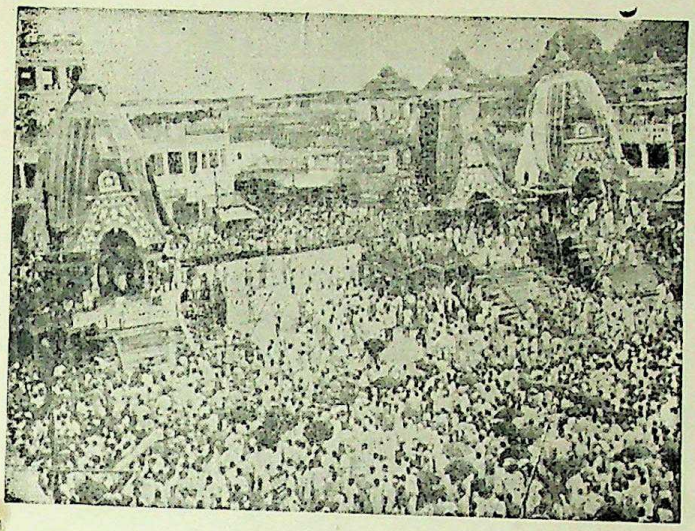

रथयात्रा

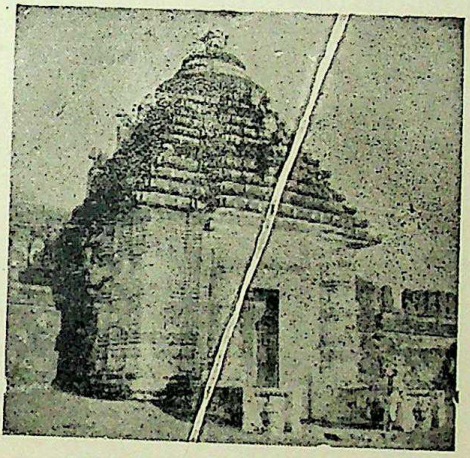

श्री गुण्डिचा मन्दिर

द्वारके निकट श्री चैतन्यकी ऊँगलीके चिह्न दर्शक देख सकते हैं। यह गरुडस्तम्भ इतना पवित्र तथा सहायक है कि प्रत्येक अमावास्या, संक्रान्ति, शनिवार, मङ्गलवार तथा व्यतिपात तिथियोंमें धर्मनिष्ठ व्यक्तिगण गरुडजीके स्नान जलको सर्वरोग निरोधकके रुपमें व्यवहार करते पायेजाते है।

४७- जयविजय द्वार

सात बन्धोंके साथ सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्थापत्य कलाओंसे परिपूर्ण यह अनुपम द्वार उत्कलीय स्थापत्य कलाका एक सजीव तथा सूक्ष्मतम प्रतीक और निदर्शक है। श्री जगन्नाथ जीकी रससिक्त रासलीलाओंके सभी भाव-विभाव यहाँ अंकित है। इसी द्वारके सामने दोनोंतरफ जय-विजयकी भव्य मूर्त्तियाँ चिर सजाग तथा सतर्कित मुद्रामें विराजित हैं। मूर्त्तियोंका सौन्दर्य तथा कलात्मक रुपसज्जा अनुपम है जय-विजय महावैकुण्ठके ऐश्वरीक प्रतिहारी हैं और रत्न सिंहासनके रक्षक भी हैं।

४८- मुखशाला

यहाँ अष्टमंजरी शक्तिकी प्रतिकृति देखीजाती हैं। श्री जगन्नाथजीके रत्नभण्डारके रक्षक श्री लोकेश्वरजीका अवस्थान भी यहाँ है। श्री जगन्नाथजीका रत्नभण्डार, वस्त्र और पुष्प भण्डार तथा शयन कक्ष इसी स्थानपर है। श्री महाप्रभुओंके

जयन्ति उत्सव यहीं मनाए जाते हैं। स्नानयात्रासे लेकर श्री गुण्डिचा यात्राके प्रारम्भतक श्री जगन्नाथजीको भोग नैवेद्य आदि यहीं समर्पित होते हैं। इससे श्री मन्दिरकी सुखशालाकी विशेषताएँ बहुमुखी हैं। इस सुखशालाके बाहरी सिस्तेपर अङ्कित केलि-क्रीडाओंके अनेकसे चित्र दिखाइ पडते हैं। श्री मन्दिरके भीतर इस प्रकारेको चितोंकी आवश्यक और उद्देश्य सिर्फ मनोरंजनार्थ नहीं, वेद, तंत्रशास्त्र तथा दर्शन शास्त्र सम्मत हैं।

४१- कलाघाट द्वार

श्री विष्णु भगवान सिद्धि, विभूति; अणिमा, प्रज्ञा, धी, ज्ञान, प्रेम, आसक्ति, रति, कलि, सत्य, सुसूप्ति, जागृति, तुरीय, क्षमा और निर्वाण आदि सोलह कलाओंके प्रतिकात्मक आधार हैं। सुखशाला और रत्नसिंहासनके मध्यबर्त्ती यह द्वार उपर्युक्त प्रत्येक कलाका संगमस्थल है। योगीयोंकी चिन्तानुसार यह आज्ञाचक्र भी है। इस कलाघाट द्वारका पार करनेके बाद दर्शनाभिलाषी भक्तोंको रत्नसिंहासनका फर्श या सहस्रार दिखाइ पड़ता हें। श्री यंत्रके अनुसार यह प्रमाणिय है कि इसके नीचे बहुसंख्यक शालग्राम रहते हैं। अतः यह स्थान अतिव पबित्र मानाजाता है। एकनिष्ट विश्वासके साथ इस स्थानके स्पर्श मात्रसे मोक्षलाभ सुनिश्चित है, यह बात शास्त्रोक्त है।

५०- रत्नसिंहासन

महाभारतमें अन्तर्वेदी नामसे इसकी प्रसिद्धि मानी गई है। श्री पुरुषोत्तम क्षेत्रमें यह सबसे पवित्रतम स्थान माना गया है। इसका दूसरा नाम शङ्खनाभिमण्डल (चित्र न० १ देखिये) भी है। यूँकि किसी मानुषी शक्तिसे इसका उद्भव नहीं, या ऐसी कल्पनातक भी नहीं की जा सकती, इसलिये यह अलौकिक ही है। श्री जगन्नाथजीसे भी यह सिंहासन पवित्रतर समझा जाता है। इस रत्न सिंहासनके चारो ओर परिक्रमा करके उसको स्पर्श करनेवाला मानव निश्चय ही मोक्षलाभ की ओर अग्रसर हो जाता है। इस चिर पवित्रमय तथा भव्य सिंहासनपर क्रमानुसार बाएँसे दाहिनेको ओर श्री बलभद्रजी देवी श्री सुभद्राजी और जगदीश्वर श्री जगन्नाथजी अपार शक्तिसम्पन्न श्री सुदर्शनचक्र, माधव, श्री देवी तथा भूदेवीजी समेत बिराजित है। अतः इसे सप्तावरण पीठ भी कहाजाता है।

५९- श्री जगन्नाथ, बलभद्र तथा सुभद्रादेवीजीका मूर्त्तितत्व

पुरीके श्री जगन्नाथ मन्दिरमें पूजित श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा देवीका बिग्रह सम्बधीय तत्व बहुत गूढ तथा लौकिक ज्ञानके परेका बिषय है। यह तत्व बहुत ही दुरुह तथा कष्टकर व्यापार है। क्योंकी भरतके किसी भी स्थानपर ऐसी

रहस्यजनक प्रतिमाओंका पूजन पाया नहीं जाता। सबसे पहले यूपाकृति सम्पूर्ण अशरीरी प्रतिमाओंके भीतर देवता-ओंकी कल्पना करके पूजा अर्चना तथा उपासना प्रारम्भ की गई थी। बादको कुछ दिनोंके उपरान्त इन यूपाकृति प्रति-माओंपर आँख और मुँहका अंकन कर श्री जगन्नाथ, बलभद्र तथा सुभद्राके नामसे इन्हें परिचित कराया गया। प्रमाण है कि इन्द्रद्युम्नके द्वारा बिद्यापति नामक एक ब्राह्मण श्री जगन्नाथजीके अनुसन्धानके लिये नियुक्त होकर घूमते-घूमते उडीसाके दशपल्ला नामकी रियासतके एक घने जङ्गलमें जा पहुँचे। वहाँ उन्हें नीलमाधबजीके रूपमें श्री जगन्नाथजीके दर्शन मिले। उसी नीलमाधव मन्दिरमें उन्हें तह देववाणी सुननेको मिली कि स्वयं भगवान तीन दारु (काष्ठखण्ड) के रुपमें पुरीके चक्रतीर्थके पास पहुंचेगें और वही दारू श्री मन्दिरमें पूजित होंगे। उस दैवबाणीपर संपूर्ण बिश्वास रखकर ब्राह्मण बिद्यापति लौट आये और उन्होंने महाराज इन्द्रद्युम्नसे सभी बातें समझाकर कही। देखागया कि दैववाणीके ही अनुसार निर्द्धारित पूर्णिमा तिथिपर तीन दारू काष्ठफलक) महोदधिको फेनिल नील जलराशिपर तैरते हुए चक्रतीर्थके किनारे आ लगे। उन दारूओंपर शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म आदि संकेतोंको देखकर महाराज इन्द्रद्युम्न आनन्दसे विह्वल हो उठे और आनुष्ठानिक याग-यज्ञादि उत्सवोंके साथ बडी धुमधामसे लोगोंके द्वारा उन दारूओंको

जनकपुर (आदको श्री गुण्डिचा मन्दिर) ले आए। उसि दिन एक बूढ़े कारीगरका छद्मवेश धारण कर स्वयं भगवान राजा इन्द्रद्युम्नके पास आ पहुंचे और उन दारूओंसे श्री जगन्नाथ विग्रह बनादेनेका प्रस्ताव भी राजाको दिया। लेकिन उस बूढे कारिगरकी ओरसे राजा इन्द्रद्युम्नके निकट एक सर्त्त रखी गई थी कि एक आबद्ध गृह (बन्द कमरा) के अन्दर २१ दिनोंतक रहकर वे प्रतिमाका निर्माण करेंगे। साथ ही निर्माण कायके उन २१ दिनोंके भीतर किसी भी प्रकारकी बाधा उन्हें नहीं दी यायेगी और उस बन्द कमरेका द्वार भी नहीं खोला यायेगा। राजा इस सर्त्तपर राजी हुए। कारीगरके कथानुसार निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछदिनोंतक लकडी काटनेकी आवाज भी उस बन्द कमरेके भीतरसे आती रही। किन्तु जब कुछ दिनोंतक उस बन्द कमरेके अन्दरसे राजाको लकडी काटनेकी आवाज बिलकुल नहीं सुनाई दी तब घबराकर राजाने ठीक १५ हवें दन उस कमरेका दरवाजा खोलदिया। खोलनेक उपरांत राजाने देखा कि यह बूढा कारिगर वहाँ नहीं था और थे केवल आजके जैसे श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा जीके तीन देव बिग्रह जो उन दारूओंसे बनाए गये थे। ब्राह्मण बिद्यापतिके प्रति उस दैववाणीके अनुसार उसी दिनसे वे प्रतिमाएँ आजतक पूजित होती आ रही है। इन देवताओंका गठन वेदकी कल्पनानुसार ऊँकार परमब्रह्मके अवलम्बनपर हुआ है।

५२- बाहारीवेढ़ा (घेरा)

यह बताया जा चुका है कि श्री मन्दिरकी दो वेढाएँ या घेराएँ होती है। (१ भीतरी वेढा या कुर्मवेढा, (२ बाहरी वेढा। कुर्मवेढाके भीतर रहे मन्दिरों, देव विग्रहों और दर्शनीय स्थानोका विवरण दिया जा चुका है। अब बाहरी वेढा का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

५३- चाहाणी (दर्शन) मण्डप

यह मण्डप "वावीस पावच्छ" की बाईं तरफ है। रथयात्राके समय श्री महालक्ष्मीजी इसी भी मण्डप परसे रथयात्राकी झाँकी लेतेहुए रथारूढ श्री जगन्नाथजीके दर्शन किया करती है।

५४- रसोडा (पाकशाला)

श्री मन्दिरके इस बिशाल पाकशालामें दो सौ (२००) अग्निकुण्ड या चूल्हे हैं। यहाँ रोज ६०० सूपकार या श्री मन्दिर सुआर महासुआर रसोई (पाककार्य करते है। प्रत्यह श्री जगन्नाथजीके प्रत्येक धूप भोग) के लिये नैवेद्ययोग्य अन्न, व्यञ्जन आदि पदार्थ यहाँ पकाए जाते है। रोज यज्ञके बाद उस यज्ञकी अग्नि का इस रसडेमें व्यवहार किया जाता है।

५५- श्री रामचन्द्र मन्दिर

श्री मन्दिरके दक्षिण दरवाजेके पास श्री रामचन्द्रजीका

बिग्रह दर्शनयोग्य है। इसके सिवाय श्री चैतन्यदेव बारह भैयावाले हनुमान और नृसिंहजीका मन्दिर भी यहाँ देखनेको मिलजाते हैं। बूढीमाँ और माता शीतलाजीका मन्दिर भी यहाँ है। ये दो देवियाँ चेचकको दूर करनेवाली अधिष्ठात्री देवीके रूपमें पूजित हैं।

बारह भैया हनुमान श्री महाप्रसादकी सुरक्षाका दायित्व निभाते है। बाली, गय, गवाक्ष, सुशेण, अङ्गद, वीर हनुमान, गन्धमार्दन, तराक्ष, जाम्बवान, सुग्रीब, नल और नील आदि कपिगण यहाँ इकटठे है। साधारणतः इस दक्षिण दरवाजेमें होकर तांत्रिक साधुगण श्री मन्दिरमें प्रवेश करते हैं। इस मन्दिरके पीछेकी ओर निर्माल्य खला है (जीकी फर्शपर अन्न महाप्रसादको सुखाकर निर्माल्य बनाया जाता) है। यहाँ रणमुखी हनुमान जीकी स्थापना की गई है।

इस दक्षिण द्वारके निकट बाहर रास्तेके वीर हनुमानजीकी इतनी बडी मूर्त्ति पुरीभरमें और कहीं भी नहीं देखी जा सकती। इन्हें 'कानपाता' (उत्कर्ण) हनुमान कहाजाता है।

५३- उसका बाटिका या फुल का बगिचा

इस बगीचेसे श्री मान्दरकेलिये आवश्यक फूल, तुलसी आदि संगृहित होते हैं। यह मनोरम पुष्पोद्यान यात्रीयोंके लिये दर्शनयोग्य है।

५७- चतुर्धाम

भारतके चार प्रसिद्ध तथा पवित्र धामोंके देवताओंकी स्थापना यहाँ की गई है। जो व्यक्ति किसी कारणसे सारे भारतका भ्रमणकर चार धामोंकी यात्रा तथा वहाँके देवताओंके दर्शन कर नहीं सकते वे अगर यहाँ प्रतिष्ठित देवताओंके दर्शन करे और सभी आनुष्ठानिक कार्योंका निर्वाह कर लें तो उन्हें चतुर्धाम दर्शनकी फल-प्राप्त हो सकती है। इस मन्दिरमें बद्रीनाथके बद्रीनारायणजी, द्वारकाके द्वारिकाधिपती श्रीकृष्णजी, रामेश्वरके रामनाथजी और जगन्नाथ पुरीके श्री जगन्नाथजी विराजित है।

इस चतुर्धामके रक्षक बीर हनुमानजी हैं जिन्हें इसी मन्दिरकी दाईं ओर अर्थात श्री जगन्नाथ मन्दिरके पश्चिम द्वारके पास देखा जा सकता है।

५८- नीलाद्रि बिहार

श्री मन्दिरके पश्चिम द्वारपर पूजित श्री हनुमानजीके ठिक पीछेकी ओर नीलाद्रिबिहार नामक एक अनुष्ठानकी स्थापना हुई है। जगन्नाथ धर्म तथा श्री मन्दिरके बारेमें अध्ययन, गवेषणा, श्री जगन्नाथजीसे संपृक्त शास्त्रोंकी चर्चा और तत्सम्पर्कीय ज्ञानार्जनके लिये यह सांस्कृतिक अनुष्ठान

श्रीमन्दिरमें स्थापित हुआ है। इसके शिक्षा विभागमें जगन्नाथ धर्म योग, योगासन, पूजापद्धति, तन्त्र, आध्यात्मिक नृत्य तथा गीत आदिकी शिक्षा दी जाती है।

यहाँ रामलीलाके पोडश अनुप्रास, सभी भक्तोंके भक्तिपूर्ण दृश्य, रामायणके आदश चित्र और श्री पुरुषोत्तम जगन्नाथजीकी अपूर्व तथा अलौकिक महिमाओंके धाराबाहिक बिबरण रमणीय मूर्तियोंके माध्यमसे उत्तम रूपसे बर्णित हैं। यहाँ श्री जगन्नाथ मन्दिरसे सम्बधित बहु मूल्यबान ग्रन्थ शोधमूलक पञ्जिकाएँ, ताम्रशासन (ताम्रलेख) दलीलें तथा दस्तावेज आदि प्रत्नतत्व मूल्य सम्पन्न सामग्रियाँ सभी साधारण व्यक्तियोंके देखनेके उद्देश्यसे सुरक्षित है। श्री मन्दिरमें आगत प्रत्येक दशनाभिलाषी तथा अनिसंधित्सु व्यक्ति इन्हें देखकर यह जानसकता हैकि वास्तवमें श्री जगन्नाथजी और उनका यह मन्दिर कितना प्राचीन है, कितना गौरवशाली है तथा कितनी बिशालताओंसे भरपूर हैं। इस मन्दिरके पीछे लौकिक, पारलौकिक, दैविक, आध्यात्मिक आदि बिशेषताएँ किस प्रकार युगोंसे जुडी हुई है यह भी इस अनुष्ठानके दर्शनसे मालूम किया जा सकता है। प्रत्येक दर्शककों यहाँ श्री जगन्नाथ मन्दिरका मुखपत्र "श्री मन्दिर समाचार" मिल सकता है।

५९- कैबल्य बैकुण्ठ अथवा कोयल बैकुण्ठ

इसका दूसरा नाम देव निर्बाणभूमि है। यहींपर द्वापरमें

पाण्डवोंने भगवान श्रीकृष्णजीके इन्द्रनीलमणिमय शरीरको समाधि की थी इसलिये श्री जगन्नाथजीके प्रत्येक नबकलेबरके समय बिसर्जित बिग्रहोंकी समाधि यहीं की जाती है। स्मरणातीत कालसे एक शाल्मली लता इस स्थानको आच्छादित करती आ रही है। यह स्थान अतिब पबित्र मानाजाता है। पुरी आगत यात्रीलोग यहींपर अन्नदान दिया करते हैं। (भोग आटका चढाते हैं)

श्री वैकुण्ठेश्वर शिबजी इसके तत्वाबधारकके रूपमें प्रतिष्ठित हैं। यह स्थान श्री मन्दिरकी उत्तरी तरफ है। इसे स्वर्गद्वार भी कहाजाता है। नबकलेवरके समय देबबिग्रहोंके निर्माणकेलिये आनीत पबित्र दारुओंको यहाँ अति गुप्तरुपसे सुरक्षित कियाजाता है। उत्तरायणी, शीतला, झाडेश्वरी, त्रिशक्ति (इच्छा, क्रिया, और ज्ञान) और ईशनेश्वर महादेब जीकी स्थापना यहाँ की गई है। साथ ही यहाँ श्री बेढा लोकनाथ जीकी प्रतिमूर्त्ति स्थापित हुई है।

श्री मन्दिरकी इस ओर पूजित देबियोंमें माता शीतला अधिक प्रसिद्ध हैं। उनके ठीक सामने एक कूआँ है। जिसे 'सोनेका कूआँ' कहाजाता है। सालभरमें सिर्फ एकबार, स्नानपूर्णिमा (ज्येष्ठपूर्णिमा) के दिन श्री जगन्नाथको इस कूओंके जलसे स्नान कराया जाता है। इस कूओंके जलकी रखवाली माता शीतलादेबी किया करती है।

६८- आनन्द बाजार या महाप्रसाद खला

श्री जगन्नाथजीको लगाये गये सभी प्रकारके भोग अर्थात् श्री महाप्रसादकी बिक्री यहाँ होती है। महाप्रसादके साथ श्री मन्दिरमें आवश्यक अन्यान्य सामग्रियाँ भी यहाँ मिलती हैं। यह स्थान पूर्वद्वारकी उत्तर दिशामें अवस्थित है।

६९- देवस्नान मण्डप या स्नानवेदी

आनन्द बाजारके नामसे श्री महाप्रसाद बिक्री केन्द्रके निकट देवस्नान मण्डप अवस्थित है। यह एक ऐसा विशाल-काय तथा भव्य मण्डप है, जिसपर खडे होकर एक दर्शक समुदाय पुरीका मनोरम दृश्य देख सकता है। प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठपूर्णिमाके दिन इस मण्डपपर श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्राजी विराजित होते हैं और वहींपर उनको स्नान करायाजाता है। इस मण्डपपर विराजित तीन मूर्त्तिआँ मन्दिरके बाहर प्रधानमार्ग परके सभी व्यक्तियोंको स्पष्ट रूपसे दिखाइ पडते हैं। इसलिये उस दिन रास्तेपर खडे होकर ब्राह्मणसे लेकर चाण्डालतक, जाति, वर्ण, धर्म, निर्विशेषमें सभी लोग निर्बाध रूपसे तीन मूर्त्तिओंका दर्शन किया करते हैं।

६२- भेटमण्डप

यह स्नान मण्डपकि दूसरी तरफ है। रथयात्राके बाहुडा (वापसी) के दिन श्री महालक्ष्मीजी यहाँ रहकर रथारूढ श्री जगन्नाथजीके दर्शन करती है। उसके बाद जब रथ सिंहदरबाजेपर आ पहुंचते है तब ज्येष्ठ बलभद्रजी तथा ननन्द सुभद्राजीको श्री मन्दिरतक अभिबादनके साथ ले आति हैं। किन्तु जब श्री जगन्नाथजी मन्दिरमें प्रवेश क नेका उद्यम होते तब श्री लक्ष्मीजी पहले अभिमानकेसाथ सिंहद्वार बन्द करदेनेकेलिये सेबकोंको आदेश दे देती हैं। दरबाजा बन्द हो जाता है। काफ़ी देर तक दोनों पति पत्नीयोंमें मान मनोबल चलता और अंतमें श्री जगन्नाथजी जब श्री लक्ष्मीजी दरवाजा खोलनेका आदेश दिया करती हैं।

नीतिसम्पादन

'नारदीय पञ्चरात्र', 'सूत संहिता' और 'नीलाद्रि अर्चन चन्द्रिका'के अनुसार पुरीके श्री जगन्नाथ मन्दिरमें ६४ उपचारोंके साथ पूजा नैबेद्य आदि कार्य सम्पन्न हुआ करते हैं। श्री मन्दिरकी पूजानीति प्रत्यह नीचे लिये लिखे अनुसार हुआ करता है—

१– मङ्गल आरती
२– अबकाश (स्नान, मार्जनादि कार्य)
३– सिंहार शृङ्गार) वेशभूषा या सिंगार
४– दैनिक पाकशाला होम; सूर्य पूजा और द्वारपाल पूजा
५– गोपालबल्लभ जलपान)
६– सकाल धूप (प्रातःकालीन अन्नभोग)
७– सिंगार
८– भोग मण्डप
९– द्विप्रहर धूप (दूपहरका अन्न-व्यञ्जनादि भोग)
१०– पहुड (शयन)
११– संध्या आरती
१२– संध्या धूप (शामका भोग)
१३– चन्दनलागी (चन्दन वेश)
१४– बडसिंहार वेश
१५– बडसिंहार भोग (रात्रीकालीन भोग)
१६– शयन ठाकुर बिजय और आरती
१७– गीतगोबिन्द गायन
१८– पहुड (शयन)

उपयुक्त साधारण नीति बिधियोंके व्यतीत मादला पंजिका (श्रीमन्दिर बिबरणग्रन्थ या श्रीमन्दिर इतिहास) के अनुसार बर्षके भिन्न-भिन्न पर्व-स्योहारोंके दिनोमें और अनेक बिशिष्ट (अतिरिक्त) नीति-बिधियोंका अनुष्ठान भी कियाजाता है।

श्री श्री जगन्नाथजीकी प्रसिद्ध द्वादश यात्रायें

यात्रायोंके नाम—	पालत दीवस— (उत्कलीय पचांगके मतानुसार)
१। चन्दन-यात्रा जलक्रीडा उत्सव	वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया)के दिनसे २१ दिनोंतक।
२। नीलाद्री महोदय	बैशाख शुक्ल अष्टमीके दिन।
३। स्नानयात्रा या देवस्नान पूर्णिमा (इसदिन श्री जगन्नाथ आदि तीन मूर्त्तियाँ स्नानमण्डप पर आती हैं और इस तिथीपर भारतके सभी तीर्थोंका समावेश इस पुरुषोत्तम क्षेत्रमें होती हैं। अतः इस अवसरपर भारतके बिभिन्न प्रातोंसे यात्री पुरी आया करते हैं। इसदिन श्री जगन्नाथ जीका स्नान - उत्सव मनाया जाता है। स्नानके बाद श्री जगन्नाथजीका हाथीबेश (गणेश वेश) होता है।	ज्येष्ठ पूर्णिमाके दिन।
४। रथ यात्रा या गुण्डिचा (यह यात्रा पुरीकी सर्वश्रेष्ठ यात्रा है। इस अवसर पर	आषाढ शुक्ल द्वितीयासे त्रयोदशीतक।

श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्राजी अलग अलग तीन रथोंपर बैठकर श्री गुण्डिचा मन्दिर (जनकपुर) जाते हैं। श्री जगन्नाथजीके रथको नन्दि-घोष, बलभद्रजीके रथको ताल-ध्वज और सुभद्रा देवीजीके रथको देवदलन कहाजाता है। श्री गुण्डिचा मन्दिरमें ७ रोज रहनेके बाद तीन मूर्त्तियां फिर रथारूढ होकर श्री मन्दिर लौट आती हैं और रास्तेमें तीन दिनोंतक रहा करते हैं। राजा इन्द्रद्युम्न और उनकी पत्नी गुण्डिचादेवीने पहले गुण्डिचा मन्दिरमें ही श्री जगन्नाथजीकी स्थापना की थी। बादमें बडी धूम-धामके साथ उन तीन मूर्त्तिओंको तीन रथोंपर बिठाकर वे मुख्य मन्दिरमें ले आये और वहाँ उनकी

स्थापना की थी। इससे रथयात्राका प्रारम्भ हुआ है और यह यात्रा सहस्र वर्षोंसे उस पवित्र दिवसकी स्मृतिमें मनाई जा रही है। इस यात्राके अवसर पर भिन्न धर्मावलम्बी लोग पुरीके प्रधान मार्गपर बेझिझक तथा वे रोकठोक श्री जगन्नाथजीके दर्शनका लाभ उठाकर पवित्र हो जाते हैं। इसलिये इस यात्राका दूसरा नाम 'पतितपावन महोत्सव' भी है।

५- बाहुडा (वापसी) यात्रा	आषाढ शुक्ल दशमी या एकादशी
६- हरिशयन एकादशी	आषाढ शुक्ल एकादशी
७- दक्षिणायन संक्रान्ति	ककट संक्रान्ति
८- पार्श्व परिवर्त्तन	भाद्र शुक्ल एकादशी
९- देवोत्थापन एकादशी	कार्त्तिक शुक्ल एकादशी
१०- प्रावरण षष्ठी	मार्गशीर शुक्ल षष्ठी
११- मकर संक्रान्ति	मकर मासका प्रथम दिवस

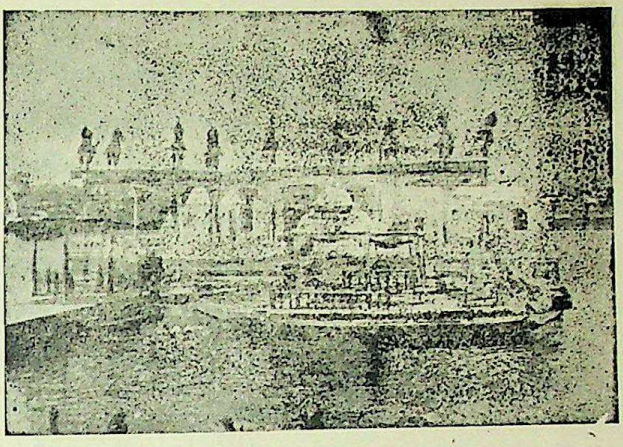

चन्दन यात्रा

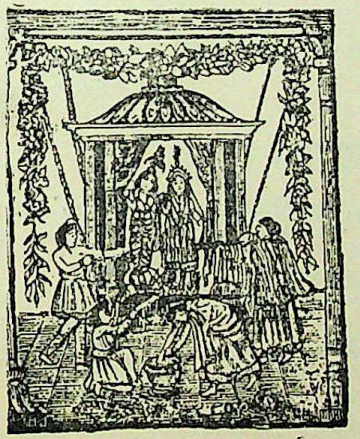

दोल यात्रा (होली)

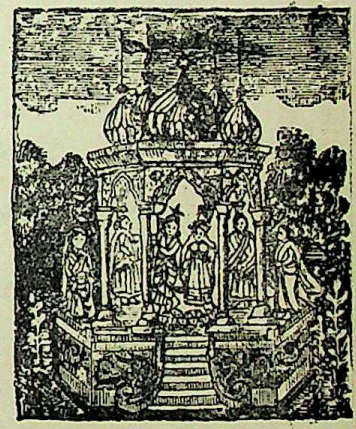

झुलणयात्रा (झुला

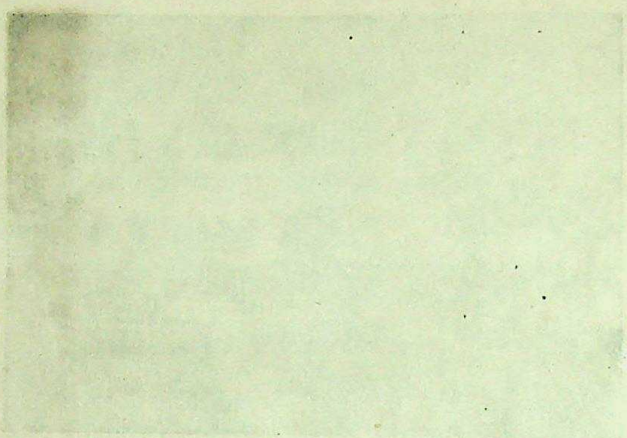

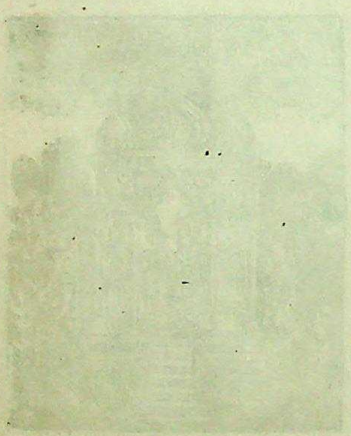

१२। दोल यात्रा (होली) फाल्गुन शुक्ल दशमीसे पूर्णिमातक
(मेघनाद प्राचीरके बाहर
श्रीमन्दिरके उत्तरपूर्व कोने
पर श्री जगन्नाथ जीका
दोलमण्डप है इस अव-
सरपर श्री जगन्नाथजीकी
प्रतिनिधि मूर्त्ति इस
मण्डपपर आ बिराजती
हैं और बडी धूम-धामसे
उत्सव माना या जाता हैं)

१३। दमनक चतुर्दशी चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
(इस अवसरपर श्रीजगन्नाथ
जीके द्वारा गुप्त रूपसे दमणा
पत्र तोडनेका उत्सव मनाया
जाता है।)

दूसरी उपयात्राएँ

पर्व-त्याहार, पटजयन्तियाँ (जन्मोत्सव) तथा

अन्यान्य उत्सव

१। नृसिंह जन्म वैशाख शुक्ल चतुर्दशी

२। शीतलषष्ठी ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी

३। रुक्मणि हरण एकादशी	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
४। स्नान यात्रा	ज्येष्ठ पूर्णिमा
५। अनबसर	ज्येष्ठ पूर्णिमासे १० रोजतक
६। नबयौबन व नेत्रोत्सब	आषाढ अमाबसके दिन या प्रतिपदके दिन
७। रथयात्रा	आषाढ शुक्ल द्वितीया
८। नबदिन यात्रा	आषाढ शुक्ल द्वितीयासे नौ दिनोंतक
९। हेरा पञ्चमी	आषाढ शुक्ल षष्ठीकी रात
१०। बाहुडा यात्रा	आषाढ शुक्ल दशमी या एकादशी
११। चित्रा (तिलक) लागि	सावन अमाबसके दिन
१२। झूलण यात्रा (झूला)	साबन शुक्ल नबमीसे ७ दिनोंतक
१३। गह्मापूर्णिमा (बलभद्रजन्म)	साबन पूर्णिमा
१४। राहु रेखा लागि	भाद्रब कृष्ण पंचमी
१५। जन्माष्टमी (कृष्णजन्म)	भाद्रब कृष्ण अष्टमी
१६। कृष्णलीला	भाद्रब कृष्ण अष्टमीसे शुक्ल त्रयोदशी तक
१७। सप्तपुरी अमाबास्या	भाद्रब अमाबस के दिन
१८। गणेशजन्म (गणेशचतुर्थी)	भाद्रब शुक्ल चतुर्थी
१९। राधाष्टमी	भाद्रब शुक्ल अष्टमी

२०।	बामन जन्म (सुनिया या उडिआ नववर्ष)	भाद्रव शुक्ल एकादशी या द्वादशीके दिन
२१।	अनन्त चतुर्द्दशी	भाद्रव शुक्ल चतुर्द्दशी
२२।	इन्द्रगोबिन्द पूजा या गोबिन्द बन्दापना	भाद्रव पूर्णिमाके दिन
२३।	सहस्र कुम्भाभिषेक, दुर्गा जन्म और षोडश दिनात्मक दुर्गापूजा	आश्विन कृष्ण अष्टमीसे शुक्ल दशमीतक
२४।	दशहरा (बिजया दशमी)	आश्विन शुक्ल दशमी
२५।	कुमार पूर्णिमा	आश्विन पूर्णिमा
२६।	बालधूप	आश्विन शुक्ल एकादशीसे कार्त्तिक पूर्णिमातक
२८।	प्रथमाष्टमी	मागशोर अगहन कृष्ण अष्टमी
२९।	दीपाबली	मार्गशीर कृष्ण चतुर्द्दशीसे शुक्ल प्रतिपदतक
३०।	बकुल अमाबास्या	पौष अमाबास्या
३१।	पुष्पाभिषेक	पौष पूर्णिमा
३२।	नबांक परिक्रमा और मकर संक्रान्ति	मकर संक्रान्तिके प्रथम दिबस और पूर्व दिबस
३३।	बसन्त पंचमी	माघ शुक्ल पंचमी
३४।	माघ पूर्णिमा	माघ पूर्णिमाके दिन
३५।	महाशिबरात्रि	फाल्गुन कृष्ण चतुर्द्दशी

३६। वेष्ट	श्री जगन्नाथ मन्दिरके विधानके अनुसार यह उत्सब फाल्गुनके महीनेमें अनुष्ठित होता है।
३७। चाचेरी	फाल्गुन शुक्ल दशमीसे चार दिनोंतक।
३८। होली (दोलयात्रा)	फाल्गुन पूर्णिमा
३९। श्री रामजन्मोत्सब	चैत्र शुक्ल नबमी।
४०। श्री रामलीला	चैत्र शुक्ल नबमीसे यह यात्रा प्रारम्भ होती है और राबण बधतक चलता है।
४१। पणा संक्रान्ति या महाबिषुब संक्रान्ति	श्री हनुमान जन्म तथा उत्कलमें नब पंजिका (पंचाग)के प्रचलनका प्रथम दिन।

वेश (सिंगार)

स्वतंत्र रूपसे

१। वैशाख महीनेमें	चन्दन बिभुषण बेश। यह वेश (सिंगार) वैशाख शुक्ल तृतीयासे लेकर ४२ दिनोंतक चलता है।

२। स्नान पूर्णिमाके दिन	गणेश वेश या हाथी वेश (महाराष्ट्रके गणेशभक्त गणपति भट्टजीके श्री जगन्नाथजीने गणेशके रूपमें इसी दिन दर्शन दिए थे।)
३। आषाढ शुक्ल एकादशी या (रथके उपर) द्वादशी के दिन	स्वर्णवेश
४। भाद्रब कृष्णपक्ष दशमीके दिन	बनभोज वेश
५। भाद्रब कृष्ण एकादशीके दिन	कालीय दलन वेश
६। भाद्रब कृष्ण द्वादशीके दिन	प्रलम्बासुर वेश
७। भाद्रब कृष्ण त्रयोदशीके दिन	कृष्ण-बलराम वेश
८। भाद्रब शुक्ल द्वादशी या त्रयोदशीके दिन	बामन बेश
९। आश्विन शुक्ल दशमीके दिन	राजाधिराज वेश
१०। आश्विन शुक्ल एकादशीके दिनसे कार्त्तिक शुक्ल दशमीतक	राधादामोदर वेश (इस अबधिके भीतर आनेबाले सोमबारकेदिन श्रीबलभद्र जीका हरिहरवेश होताहै)
११। कार्त्तिक शुक्ल एकादशीको	लक्ष्मीनारायण वेश (खडीकेतकी)
१२। कार्त्तिक शुक्ल द्वादशीको	बकचूडा वेश (बामन)
१३। कार्त्तिक शुक्ल त्रयोदशीको	त्रिबिक्रमवेश आडीकेतकी
१४। कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी	नृसिंह वेश (डालीकेतकी)

१५। कार्त्तिक पूर्णिमाके दिन — लक्ष्मीनारायण वेश (राजराजेश्वर)

१६। कार्त्तिक शुक्ल त्रयोदशी या चतुर्दशीके दिन — श्री नागार्जुन वेश (अगर कार्त्तिक एकादशीसे पूर्णिमा-तकके दिवस ५ के बदले ६ हों तो)

१७। माघ अमाबाससे लेकर बसन्तपञ्चमीसे भीतर किसी भी शनिवार या बुधवारके दिन — पद्म वेश।

१८। माघ पूर्णिमाके दिन — गज उद्धारण वेश

१९। फाल्गुन शुक्ल दशमीसे लेकर (चतुर्दशीके व्यतीत) पूर्णिमातक। — चाचेरी वेश और पूर्णिमाके दिन राजाधिराज वेश

पुरी क्षेत्रके भीतर और किनि-किनि स्थानोंपर

श्री जगन्नाथजीकी नितीयाँ, उत्सब तथा अनुष्ठान आदि हुआ करते हैं।

१। वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया)से लेकर २१ दीनोंतक नरेन्द्र तालावपर चन्दनयात्रा (जलबिहार) उत्सब मनायाजाता है।

२। पुरीके प्रधान मार्गपर स्थित जगन्नाथ बल्लभ मठमें भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न नीतियाँ तथा अनुष्ठान हुआ करते हैं।

३। मार्कण्डेय तालाब— यहाँ बलभद्र जन्मोत्सब, कार्त्तिकस्नान अनुष्ठान कुमार पूर्णिमा (आश्विन पूर्णिमा) की नीति तथा ऋषि पञ्चमीके दिन अनुष्ठान हुआ करते हैं।

४। श्री लोकनाथ मन्दिर— यहाँ महा शिबरात्रिके दिन और प्रत्येक शम्भु एकादशीकी तिथिपर नीति होता है।

५। श्री यमेश्वर मन्दिर- इस शिब मन्दिरपर राधाष्टमी, चम्पक द्वादशी (बिष्णु बिबाह) श्रावणी पूर्णिमा और आश्विन पूर्णिमाके दिनोंमें नीतियाँ होती है।

६। महोदधि (समुद्र)— हर अमाबसको ठाकुरजीकी नीति होती है।

७। बासेलीसाहिका लबणीखिआ भाद्रब कृष्णपक्ष एकादशीके दिन इस चौकपर स्थित मण्डपपर श्री महाप्रभुजीका लबणी खिआ (माखन) का उत्सब मनाया जाता है।

८। उग्रसेन आश्रम— यह बालिसाहिमें है। यहाँ श्री ठाकुर-जीकी भी नीति होती है।

मार्कण्डेय आश्रम	मार्कण्डेश्वर साहिमें है
अङ्गिराश्रम मण्डप	दोलमण्डप साहिमें है
पण्डु आश्रम	गौडबाड साहिमें है

श्रावणी पूर्णिमा और आश्विन पूर्णिमाकी तिथियोंमें इन स्थानोपर श्री सुदर्शन महाप्रभुजी श्री मन्दिरसे आकर बिजय करते हैं और नीतियाँ होती है।

९। लबणी खिआ यह मण्डप कुण्ढाईवेण्ट साहिपर हैं। यहाँ कंसबधका अनुष्ठान हुआ करता है।

१०। टिकरा गोहरी (गली) और उसके निकटवाला बन्दना मण्डप यह स्थान बडाछता मठके बाजुपर है। यहाँ बामन जन्मके बाद "सप्तमेघ" नामक अनुष्ठान होता है और संखुडी वलि भी होती है। भाद्रब पूर्णिमाके दिन यहाँ इन्द्र-चन्द्र-गोबिन्द बन्दापना (बन्दना आरती आदि) तथा भोग आदि देब अनुष्ठान हुआ करते हैं।

११। दोलवेदी (दोलमण्डप) यहाँ फागुन पूर्णिमाके दिन श्री जगन्नाथजीका दोलत्सब (होली) मनाया जाता है। यह मण्डप स्थापत्य कलाकी दृष्टिसे एक दर्शनीयोग्य भव्य मण्डप है। इस मण्डपके तोरणके व्यतीत चवूतेरे (चत्वर)को चारोंओर उत्कलीय शिल्पकलाकी प्रतिकात्मक मूर्त्तियाँ सुरक्षित है। साथ ही उन मूर्त्तियाँके नीचले भागपर कई दर्शनीय दृश्योंका प्रदर्शन कियागया है। यह मण्डप और उसके चारोंओरकी दृश्यावली पुरी समागत यात्रीयोंके लिये अतिब आकर्षण एक कलामंच है।

अन्यान्य मन्दिर

श्री जगन्नाथ मन्दिरके व्यतीत पुरीमें और ऐसे अनेक मन्दिर देखे जाते हैं, जिनके पीछे महत्व, धार्मिक, बिशेषताएँ और आध्यात्मिम तत्त्व रहा करते है। तीर्थ यात्रीयोंकी जानकारीके लिये इनमेसे कइ महत्वपूर्ण मन्दिरोंका बिबरणात्मक बर्णन नीचे दिया जा रहा है।

१- श्री लोकनाथ मन्दिर— श्री लोकनाथ नामसे प्रसिद्ध शिबजी इस मन्दिरके अधिश्वर हैं। भक्तोंको आशीर्वाद कर उनकी मनोकामना पुरा करनेसे इनको बडी प्रसिद्ध है। श्री जगन्नाथजीके साथ चन्दन यात्रामें ये भाग लेते हैं और श्री मन्दिरस्थ भण्डार रक्षक भी हैं।

२- यमेश्वर मन्दिर— पुरी क्षेत्र पर बिराजित तथा श्री जगन्नाथजी जेसे सम्मानसे पूजित पञ्च महादेव, लोकनाथ, मार्कण्डेय, नीलकण्ठ, कपालमोचन आदि शिब लिंगोंके भीतर ये अन्यतम हैं। यह मन्दर गौड़बाड़ साहिमें हैं।

३- तोटा उद्यान गोपीनाथ मन्दिर— गौड़बाड़ साहिमें हैं।

४- मार्कण्डेश्वर मन्दिर— मार्कण्डेश्वर साहिपर हैं।

५- कपालमोचन मन्दिर— मणिकर्णिका साहिमें हैं।

६- नीलकण्ठेश्वर मन्दिर— ईन्द्रद्युम्न तालावके ऊपर हैं।

७- बिल्वेश्वर मन्दिर— पुरीसे सातमील दूर समुद्रके किनारे पर हैं।

८- श्री गुण्डिचा मन्दिर (जनकपुर) रथ यात्राके समय श्री जगन्नाथजी यहाँ सात दिनोंतक रहा करता हैं।

९- सिद्ध हनुमान मन्दिर— यह मन्दिर श्री गुण्डिचा मन्दिरके पश्चिम को तरफ है। (यह गोस्वामी तुलसीदास जीका पीठ भी है।)

१०- श्वेतगङ्गा— यह सरोवर (तालाव) सिंहद्वार होकर समुद्रतक जानेवाले मार्गपर, पुरी क्षेत्रके एक प्रसिद्ध तीर्थके रुपमें अवस्थित है। यहाँ मुक्तिशाला भी है।

११- मणिकर्णिका— यह मणिकर्णिका साहिमें स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं।

१२- चक्रतीर्थ— यह पुरीके बालुखण्ड नामक इलाकेमें है। जिन पवित्र दारूओंसे सर्व प्रथम श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्राजीकी मूर्त्तियाँ वनी थी। वही दारु (काष्ठफलक) यहीं आकर पहुंचे थे।

१३- चक्रनारायण— यह वालुखण्डमें है। यहाँ श्री चक्रके भीतर लक्ष्मीनृसिंहजीकी मूर्त्तियाँ विराजित हैं। नृसिंह-जन्मके दिन श्री मन्दिरसे यहाँ आज्ञामाला आनेपर ही नृसिंहजन्मका अनुष्ठान हुआ करता है।

१४- वेड़ी हनुमानजो या दरिया महावीर— यह मन्दिरभी वालुखण्ड पर है। महा विषुव संक्रान्तिके दिन यहाँ नीति और अनुष्ठान हुआ करते हैं।

१५- मौसी मा या अद्धाशनी— श्री मन्दिरसे गुण्डिचा मन्दिर जानेके प्रधान मार्गपर यह मन्दिर है। इसे श्री जगन्नाथ-जीका मौसीघर कहाजाता है। ये यूप देवी हैं।

पुरीके विभिन्न मठोंके नाम

१- गोवर्द्धन मठ— इसका दुसरा नाम बालुमठ भी है। आदि शङ्कराचार्य्य जीके द्वारा स्थापित चार मठोंमेंसे यह मठ अथर्व वेदका प्रतिक है। साथ ही यह अद्वैतबादका पीठ स्थानके रूपमें परिचित हैं।

२- एमार मठ— यह श्री भाष्यकार रामानुजाचार्यके द्वारा स्थापित विशिष्टाद्वैत संप्रदायका श्रेष्ठ मठ है।

३- जगन्नाथ बल्लभ मठ— इस मठको स्थापना विष्णुस्वामीके द्वारा हुइ है और राय रामानन्दजीका साधनापीठ है।

४- बड़ा उडिआ मठ— पुरीके बासेली साहीमें उत्कलके भागवत अनुवादक तथा परमभक्त जगन्नाथ दाशजीके द्वारा इस मठकी स्थापना हुई है। जगन्नाथ दाशजीके द्वारा व्यबहृत कई सामग्रीया यहाँ सुरक्षित हैं।

५- राधा बल्लभ मठ— इसकी स्थापना निम्बार्काचर्य जीके द्वारा हुई थी और यह मठ सिंह दरबाजेके सामने ही है।

६- बलभद्र छाता— मार्कण्डेश्वर साहिमें श्री माध्याचार्यजीके द्वारा इस मठकी स्थापना हुई थी।

७- श्री चैतन्य गंभिरा या राधाकान्त मठ— यह मठ पुरीके बालिसाहिमें है। यहाँ श्री चैतन्य महाप्रभुजीके द्वारा व्यबहृत कई सामग्रियाँ सुरक्षित है।

८- गङ्गामातामठ— श्वेतगङ्गा तालावके निकट गङ्गामाताके द्वारा इस मठकी स्थापना हुई थी। यह मठ प्रसिद्ध वेदांतिक श्री सार्वभौम भट्टाचार्यजीके साधना पीठके रूपमें परिचित है।

९- बडाछाता मठ— यह गोस्वामी तुलसीदासजीका समसामयिक मठ है। वैष्णवाग्निकी धूनि रमाना तथा श्री मन्दिरमें मङ्गल व पहुड़ (शयन) आदिमें संकीर्त्तन करना इस मठका दायित्व है। पद्मवेश कराना भी इस मठके दायित्वमें है।

१०- सिद्धबकुल मठ— यह मठ यवन भक्त शिरोमणि हरिदासजीकी साधनास्थल है। यहाँ सिद्धबकुल नामक एक इतिहास प्रसिद्ध बकुल बृक्ष है।

११- श्री महाप्रभु वैठक— यह मठ बल्लभ संप्रदायके प्रसिद्ध मठके रूपमें पुरीमे प्रधान राजमार्ग पर है।

१२- राघबदास मठ— श्री जगन्नाथजीके परम भक्त गोस्वामी रघु अरक्षितजीके द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। इस मठके द्वारा स्नानयात्राके दिन श्री जगन्नाथजीका हाथीवेश (गणेशवेश) होता है और यह प्रकारसे संपृक्त है।

१३- मंगु मठ— यह सिंह दरवाजेके ठीक सामने है। यहाँ गुरु नानकजीका आसन है इस मठके समान स्वर्गद्वार निकटवर्त्ति 'बाऊलि मठ'का आसन भी गुरु नानकजीसे संपृक्त है।

१४- कबीरभुला— यह पुरीके स्वर्गद्वारपर है। यह मठ संत कबीरजीका भजन साहेब है और यहाँ कबीरभूला भी है।

१५- मुलकचौरा मठ— यहाँ महात्मा बिदूरजी टिके हुए थे। बिदूरजीके चावलकणोंकी रोटी यहाँकी पवित्र सामग्री मानीजाती हैं।

१६- दशबतार मठ— यह मठ श्री गुण्डिचा मन्दिरके सामने है और जगजन प्रसिद्ध 'गीत गोबिन्द'के रचयिता श्री जगदेब गोस्वामीजीका साधनापीठ है।

१७- शङ्कुरानन्द मठ—यह श्रीमद् भागबतके प्रसिद्ध टीकाकार श्रीधर स्वामीजी तथा स्वामी शङ्कुरानन्दजीका मठ है।

१८- शिबतीर्थ मठ— बालिसाहिमें है।

१९- गोपालतीर्थ मठ— यह प्रसिद्ध दण्डि आचार्यके द्वारा स्थापित मठ हैं। इस मठकी औरसे जगन्नाथजीके हाथी (गणेश) वेशकी व्यबस्था होती है।

२०- महीप्रकाश मठ - यह मठ हरिचण्डि साहिमें है।

२१- बडाअखाडा मठ— यह पञ्च रामानन्दयोंका दिगम्बर अखाडा है। इसके सिबाय पुरीमें :—

निर्मोहि अखाडा,

बाघ अखाडा,

खाकी अखाडा नामके अखाडे भी हैं।

२२- पुरुषोत्तम मठ यह उड्डुलोमी आचार्यजीका मठ हैं।

२३- सोना गुसाइँ मठ— यह मठ गौड़वाड़ साहीमें है। सुवर्ण कूपकी सुरक्षाका भार इस मठपर है।

२४- आचारी मठ - स्वर्गद्वार रास्तेपर यह मठ है।

२५- वेकंटाचारी मठ— स्वर्गद्वार रास्तेपर है।

२६- समाधि मठ— स्वर्गद्वार रास्तेपर है।

२७- झाडु मठ (बडा)— स्वर्गद्वार रास्तेपर है।

२८- झाडु मठ (छोटा)— स्वर्गद्वार रास्तेपर है।

२९- जीअरस्वामी मठ— स्वर्गद्वार रास्तेपर है।

३०- कोठभाग मठ— दोलमण्डप साहीमे है।

३१- नेवलदास मठ— दोलमण्डप साहीमे है।

३२- सिद्ध मठ— दोलमण्डप साहिमे है।

३३- तोटा (उद्यान) गोपीनाथजीका मन्दिर— यह स्थान पुरीके हरचण्डि साहिमे है और श्री चैतन्यदेवके प्रथम निवास स्थान तथा गदाधर पण्डितजीके साधना पीठके रूपमें परिचित है।

३४- आहुला मठ— कुण्ढाइवेण्ट साहिमे है।

३५- लक्ष्मीभद्र मठ— सिंहद्वार पर है।

३६- छावनी मठ— सिंहद्वर पर रानी करतु ैकामोहिनीजीके साधना पीठके रूपमे परिचित है।

३७- लंगुलि (नंगा) मठ— सिंहदरवाजेपर बाबा ब्रह्मचारीजीके पीठके रूपमे प्रसिद्ध है।

३८- पिप्पलायन (पापडिआ) मठ— प्रधान मार्गपर है।

३९- उत्तरपार्श्व मठ— श्री मन्दिरके उत्तरद्वारका धर्म प्रचारक मठ है।

४०- दक्षिणपार्श्व मठ— श्री मन्दिरके दक्षिणद्वारके पास यह मठ है।

४१- कौशल्यादास मठ— श्री मन्दिरके दक्षिणद्वारके पास यह मठ है।

४२- नागा मठ— यह मठ हरचण्डि साहिमें है।

४३- पञ्जाबि मठ— श्री मन्दिरके दक्षिणद्वारपर है।

४४- बालक रामदास मठ— श्री गुण्डिचा मन्दिरके पास यह मठ है।

४५- कली-तिलक मठ— बालिसाहीमें यह मठ है।

४६- छोटाछाता मठ— श्री मन्दिरके दोलमण्डके पास यह मठ सत्संग और भजन कीर्त्तनके लिये प्रसिद्ध माना गया है।

४७- रामजी मठ— यह मठ मार्कण्डेश्वर साहीमें है।

४८- दुखिश्याम बाबा मठ— यह अन्नपूर्णा मन्त्रकी सिद्धिक रूपमें लोकनाथ रोड़पर है।

४९- नन्दिनी मठ— यह मठ मीराबाईका भजन-स्थान माना जाता है।

५०- बडासन्त मठ— यह मठ मार्कण्डेश्वर साहीमें उत्कलके पुण्यश्लोक गङ्गवंश नरेश अनङ्गभीमदेवका गुरुस्थान है।

५१- घुमुसर मठ— उत्कलके रीतिकालीन कबि श्रीकर भञ्ज तथा महाकबी उपेन्द्रभञ्जजाके साधनापीठके रूपमें इसकी प्रसिद्ध है।

५२- पण्डित मठ या चक्रतीर्थ मठ— यह मठ चक्रका रक्षक है। साथ ही चक्र प्रतिष्ठा करना इस मठका अधिकार है।

५३- झांझपोटा मठ- यह श्री चरणदास तथा रामदास बाबाजीका मठ हैं।

५४- बिजयकृष्ण गोस्वामी आश्रम— नरेन्द्र सरोबर (चन्दन तालाब) के उपर यह आश्रम हैं।

५५- सोनार गौराङ्ग मठ— चक्रतीर्थके पास है।

५६- नित्यानन्द महाप्रभुजीका गोस्वामी (गुसांई) मठ— कुण्ढाईवेण्ट साहिमें यह मठ है।

५७- सातआसन (सप्तलहरी) मठ— स्वर्गद्वारके निकट, भागबत अनुबादक श्री जगन्नाथदास गोस्वामी जीको तपस्या गुफांके रुपमें परिचित है।

५८- ऊँकारनाथ ठाकुर आश्रम— यह ठाकुर ऊँकारनाथ जीके साधनापीठके रूपमें प्रसिद्ध है।

५९- गिरिनारीबन्त अद्वैतब्रह्म आश्रम— गिरिनारीबन्त पर यह आश्रम स्थापित है।

इस प्रकार पुरीमें सात सौ बावन मठ है, ऐसा लोग कहते हैं।

श्री श्री भोलानन्द सन्यासि आश्रम

ऊँ तत सलग्न धर्मशाला, नोलिआसाहि, पुरी।

साथी प्रिण्टस, पुरी।

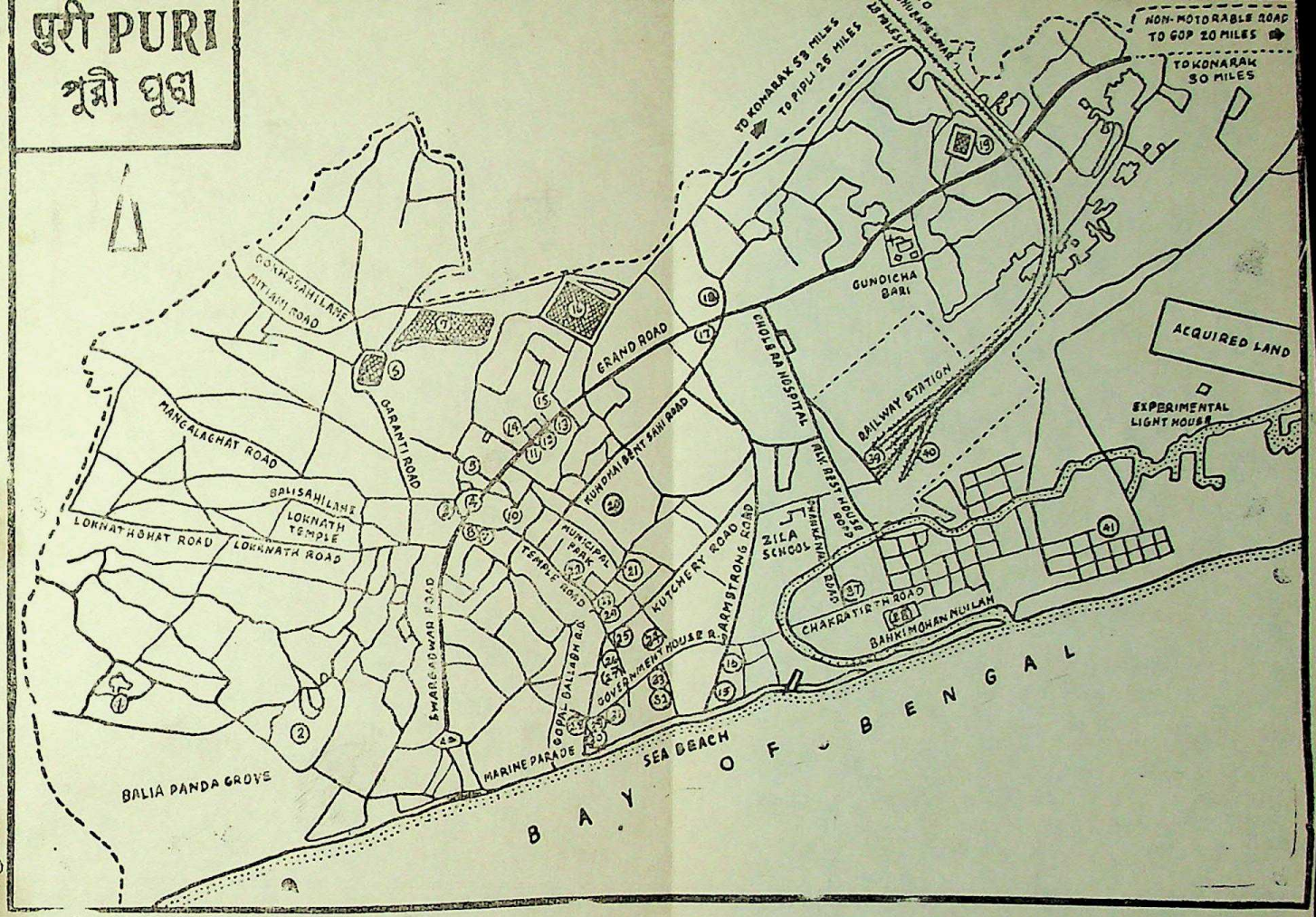

3- Sri Jagannath Temple
1- Bali Mohunt
2- Tota Gopinath
4- Taxi and Rickshaw Stand
5- Dolabedi Kunja
6- Markandeswar Tank
7- Mitiani Jheel
8- Raghunandan Library
9- Orissa Silpa Samabaya Samity (Laxmi House)
10- Orissa Art Emporium
11- Annapurna Theatre
12- City Booking Office
14- Police Station
15- Govt Bus Stand for Bhubaneswar and Konark
16- Narendra Chandan Tank
17- Petrol Pump
18- District Headquarters Hospital
19- Indradyumna Tank and Gundicha Mandir
20- Laxmi Talkies
22- Municipal Park
23- Orissa Handicrafts Emporium
24- P. & T. Office
26- District Magistrate's Office
27- State Bank of India
28- Income Tax Office
29- P.W.D. Inspection Bungalow
30- Flag Staff
31- Police Registration Office
32- Circuit House
33- Raj Bhawan (Govt. House)
34- Forest Rest House
35- Tourist Information Bureau & Tourist Bungalow (Panthanivas
37- South Eastern Railway Hotel
38. Railway Rest House
39. Railway Station
40. Railway Camping Coach
41. Sonar Gourang Math